पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Claas-V

Hindi

Specimen copy

Year- 2021-22

Semester-2

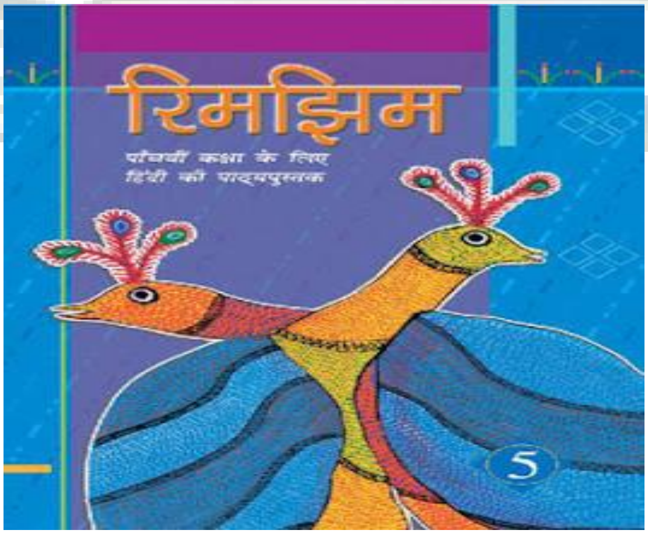

पाठ–१०

एक दिन की बादशाहत

लेखक –जीलानी बानो (अनुवाद–लक्ष्मीचंद्र गुप्त)

पाठ का सारः आरिफ़ और सलीम दो बच्चे हैं जो हमेशा परेशान रहते हैं इस बात से कि उनके घरवाले हर समय किसी न किसी बात पर उन्हें टोकते रहते हैं। ऐसा करो, वैसा मत करो' हमेशा उनकी कानों में पड़ता रहता है। यदि बाहर चले गए तो अम्मी पूछ बैठतीं कि बाहर क्यों हो और अगर अंदर रहें तो दादी बोल पड़ती बाहर जाओ यहाँ शोर मत मचाओ। दोनों बच्चों की जान मुसीबत में थी। हर वक्त पाबंदी, हर वक्त तकरार। अपनी मर्जी कभी भी नहीं चलती।

एक दिन बच्चों के दिमाग में एक तरकीब आई। वे झट अब्बा के पास पहुँच गए और उनके सामने दरखास्त पेश कर दिए–एक दिन के लिए उन्हें बड़ों के सारे अधिकार दे दिए जाएं और सब बड़े छोटे बन जाएँ। अब्बा ने उनकी बात मान ली और अगले दिन सुबह से वह बात लागू भी हो गई। आरिफ ने अम्मी को झिंझोड़ डाला, "अम्मी, जल्दी उठिए, नाश्ता तैयार कीजिए!" अम्मी को गुस्सा तो बहुत आया लेकिन उस दिन के लिए उनके सारे अधिकार छीने जा चुके थे। अब दादी की बारी थी। जैसे ही उन्होंने बादाम का हरीरा पीना शुरू किया, आरिफ ने उन्हें रोका, "दादी! कितना हरीरा पिएँगी आप... पेट फट जाएगा!" इसी प्रकार आरिफ ने खानसामे को आदेश देकर अपने सामने अंडे और मक्खन रखवाया और घर के बाकी सदस्यों को दलिया और दूध-बिस्कुट देने को कहा। आपा भी बेबस थीं उस दिन खाने की मेज पर सलीम ने अम्मी को टोका, "अम्मी, जरा अपने दाँत देखिए, पान खाने से कितने गंदे हो रहे हैं।" और अम्मी के लाख कहने पर कि वे अपने दाँत माँज चुकी हैं, सलीम ने ज़बरदस्ती कंधा पकड़कर उन्हें उठा दिया और गुसलखाने में भेज दिया।

सलीम अब अब्बा की तरफ मुड़ा, "... कल कपड़े पहने थे और आज इतने मैले कर डाले!" अब्बा को हँसी-आ गई क्योंकि दोनों बच्चे बड़ों की सही नकल उतार रहे थे। दस बजते ही आरिफ़ चिल्लाने लगा, "अब्बा, जल्दी ऑफिस जाइए।" इस बार अब्बा गुस्सा हो गए। थोड़ी देर बाद खानसामा बेगम से यह पूछने के लिए आया कि खाने में क्या बनेगा, अम्मी को याद नहीं था कि उस दिन के लिए उन्हें अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं करना है और उन्होंने खानसामे को आदेश देना शुरू कर दिया, "आलू, गोश्त ......" सलीम तुरंत आगे बढ़ आया और अम्मी की नकल उतारते हुए बोला, आज ये चीजें नहीं पकेंगी! आज गुलाब जामुन, गाजर का हलवा और मीठे चावल पकाओ!" इसी समय दादी किसी से तू-तू मैं-मैं किए जा रही थीं। "ओफ्फो! दादी तो शोर के मारे दिमाग पिघलाए दे रही हैं!" आरिफ ने दादी की तरह दोनों हाथों में सिर थामकर कहा। दादी खून का चूंट पीकर रह गईं।

कॉलेज का वक्त हो जाने पर भाई जान ने कहा, "अम्मी, शाम को देर से आऊँगा, दोस्तों के साथ फिल्म देखने ज़ाना है।" "खबरदार!" आरिफ ने आँखें निकालकर उन्हें धमकाया!" कोई जरूरत नहीं फिल्म देखने की! इम्तिहान

करीब है।" तभी बच्चों की नजर आपा पर पड़ गई। सलीम उनका गौर से मुआयना करके बोला, "इतनी भारी साड़ी क्यों पहनी? शाम तक गारत हो आएगी।... आज वह सफेद वॉयल की साड़ी पहनना।" आपा ने कहा, "हमारे कॉलेज में आज फंक्शन है।" "हुआ करे ... मैं क्या कह रहा हूं ... सुना नहीं ...?" अपनी इतनी अच्छी नकल देखकर आपा शर्मिंदा हो गईं। इस तरह आदेश देते-देते वह (एक) दिन बीत गया। दूसरी सुबह हो गई। सलीम की आँख खुली तो आपा नाश्ते की मेज सज़ाए उन दोनों के उठने का इंतज़ार कर रही थी। अम्मी ने खानसामे को हर खाने के साथ एक मीठी चीज बनाने का आदेश दे दिया। अब्बा का भी रुख अब बदल गया था।

कठिन शब्द लिखिए

- तरकीब
- खिदमत
- दरखास्त
- पाबंदी
- आपा
- तकरार
- गुसलखाना
- हुक्म
- योजना
- डाँट
- दफ्तर
- वक्त
- निहायत

शब्दार्थ लिखिए

- पाबंदी-रोक
- तकरार-झगड़ा
- दरखास्त-प्रार्थना
- खिदमत-सेवा में
- ऊधम-शोर
- आपा-बड़ी बहन
- बेबस-लाचार
- गुसलखाना-स्नानघर
- खून का घूँट पीना-गुस्सा दबा देना
- इम्तिहान- परीक्षा
- मुआयना-जाच करना
- निहायत-बिल्कुल
- हुक्म-आदेश

वैकल्पिक प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

१ :भाईजान आरिफ के गाने की तुलना किससे करते थे?

उत्तरः (क) कोयल की कूक से (ख) मेढ़क के टर्राने से

(ग) चिड़िया के कलरव से (घ) गधे के रेकने से

२ :आरिफ ने अपने लिए नास्ते मे कौन -कौन सी चीजे रखवाई?

उत्तरः (क) अंडे, मक्खन आदि (ख) दलिया, दूध व बिस्कुट

(ग) आलू, मछली व कबाब (घ) गुलाब जामुन व गाजर का हलवा

३ : अबबा ने दफ्तर जाते समय कितने रूपयो की माँग की?

उत्तरः (क) पाँच सौ (ख) एक

(ग) सौ **(घ) पाँच**

निम्नलिखित प्रश्नो के अति लघु उत्तर लिखिए।

१)आरिफ़ और सलीम सुबह-सुबह कैसे सपने देखते थे?

उ-आरिफ़ और सलीम सुबह कव्वाली गाने या आइस्क्रीम खाने के सपने देखते थे।

२)अम्मी के अधिकार किसके द्वारा छिने गए थे?

उ-अम्मी के अधिकार आरिफ़ और सलीम द्वारा छिने गए थे।

३)दादी सुबह नमाज़ पढ़ने के बाद क्या-क्या करती थीं?

उ-दादी सुबह नमाज़ पढ़ने के बाद दवाइयाँ खाती और बादाम का हरीरा पीती थी।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

आरिफ़-सलीम ने मिलकर अब्बा के सामने क्या दरखास्त रखी?

उ-आरिफ़-सलीम ने अब्बा के सामने दरखास्त रखी कि, "एक दिन के लिए बड़े बच्चे बने और बड़ो के अधिकार बच्चों को दिए जाए।

२ आरिफ़ ने अपनी योजना की शुरूआत कैसे की?

उ-आरिफ़ ने बहुत सवेरे अपनी अम्मी को झिंझोड़कर योजना की शुरूआत की।

३ सलीम ने अब्बा के हुलिये की किस प्रकार से आलोचना की?

उ-सलीम ने अब्बा के हुलिये के बारे में बताया कि बाल बढ़े हुए है, शेव बनाई नहीं है, कपड़े मेले हैं।"

निम्नलिखित प्रश्नो के दीर्घ उत्तर लिखिए।

१- सलीम ने अम्मी को टोककर क्या कहा? अम्मी को खाना छोड़कर गुसलखाना क्यों- जाना पड़ा?

उ-सलीम ने अम्मी को टोकते हुए कहा कि आपके दाँत कितने गंदे हो रहे है। जिसे -अम्मी झेप गई और खाना छोड़कर गुसलखाने की और चल दी।

२ अब्बा का हँसते-हँसते बुरा हाल क्यों हो गया?

उ-अब्बा़ का हँसते-हँसते बुरा हाल हो गया क्योंकि आरिफ़ ने अब्बा की अच्छे से नकल उतारी थी।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१ : आरिफ और सलीम ने अलग-अलग योजना बनाई थी। (गलत)

२ : अम्मी ने खाने से पहले दाँतो की सफाई नही की थी। (सही)

३ : अबबा अपने कपड़े देखकर शर्मिंदा हो गए थे। (सही)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१ : आपा सुबह-सुबह आरिफ और सलीम को जगा देती थी।

२ : भाई-जान की डाँट सुनकर आरिफ गाना गाना बंद कर देता था।

३ : आरिफ और सलीम की योजना सुनकर अम्मी ने उन्हे डाँट पिलाई।

४ : सलीम ने किताब रखकर अम्मी की नकल उतारी।

व्याकरण विभाग

महावरे

महावरे- जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है, वह मुहावरा कहलाता है।

अँगारे बरसना ---- अत्यधिक गर्मी पड़ना।

अंगारों पर पैर रखना ---- कठिन कार्य करना।

अँगारे सिर पर धरना — विपत्ति मोल लेना।

अँगूठा चूसना - बड़े होकर भी बच्चों की तरह नासमझी की बात करना।

अँगूठा दिखाना - इनकार करना।

अँगूठी का नगीना - अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति अथवा वस्तु।

हद कर दी ---- सीमा से आगे बढ़ जाना ।

हवा में गाँठ लगाना। ----- बड़ेबड़े दावे करना ।

हराम का माल ----- दूसरे की सम्पत्ति हड़प लेना ।

हल्दी लगे न फिटकरी रंग चौखा ----बिना लागत के बढिया कमाई होना

आखे चुराना - अपने को छिपाना

आँखे खुलना - सचेत होना
आसमान सिर पर उठाना - बहुत शोर करना
कान कतरना - बहुत चतुर होना
कान भरना - चुगली करना
दाँत खट्टे करना - बुरी तरह हराना
खून का प्यासा जान लेने पर उतारू होना
अक्ल पर पत्थर पडना - बुद्धिध नष्ट होना
नाक कटना - इज्जत चली जाना

लेखन विभाग

नवरात्री

नवरात्रि त्यौहार प्रति वर्ष मुख्य रूप से दो बार बनाया जाता है, हिंदी महीनों के अनुसार पहला नवरात्रि चैत्र मास में मनाया जाता है तो दूसरा नवरात्रि अश्विन मास में मनाया जाता है। अंग्रेजी महीनों के अनुसार पहले नवरात्रि मार्च/ अप्रैल एवं दूसरे नवरात्रि सितम्बर/ अक्टूबर में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है।

नवरात्रि के 9 दिनों तक चलने वाली पूजा अर्चना के बाद दसवें दिन को दशहरा के रूप में बड़े ही जोर शोर से मनाया जाता है। नवरात्रि त्यौहार 9 दिनों तक चलता है और इसमें 9 दिनों तक माँ दुर्गा के 9 अलग-अलग स्वरूपों की की पूजा अर्चना की जाती है इसलिए इस त्यौहार का नाम नवरात्रि पड़ा। माँ दुर्गा के इन 9 स्वरूपों में किस दिन किसकी पूजा और उनके दिन के रूप में मनाया जाता है

नवरात्रि नौ दिनों के लिए निरंतर चलता है जिसमे देवी माँ के अलग अलग स्वरूपों की लोग भक्ति और निष्ठा के साथ पूजा करते है। भारत में नवरात्रि अलग अलग राज्यों में विभिन्न तरीको और विधियों के संग मनाई जाती है।

देवी माँ ने महिषासुर राक्षस का वध किया था। इस राक्षस को ब्रह्मा जी का वरदान प्राप्त था जिसकी वजह से उसने उत्पात मचाया हुआ था। महिषासुर को वरदान प्राप्त था कि उसे कोई मार नहीं सकता।

लोग उसके अत्याचारों से परेशान थे तब ब्रह्मा, विष्णु और शिव जी ने अपनी शक्ति को मिलान कर देवी दुर्गा की सृष्टि की थी। देवी दुर्गा के दस हाथ थे और सारी शक्तियां भी उन्हें दी गयी थी। देवी दुर्गा ने नौ दिनों तक इस राक्षस का मुकाबला किया और अंत में दसवे दिन में जाकर उसका वध किया। देवी दुर्गा की इस शक्ति को नवरात्रि के इस त्यौहार में धूम धाम से मनाया जाता है।

गतिविधि-आरिफ़ और सलीम का चित्र बनाओ अथवा चिपकाओ।

पाठ-११

चावल की रोटियाँ

लेखक- पी औंग खिन (अनुवाद : मस्तराम कपूर)

पाठ का सारः चावल की रोटियाँ एक एकांकी है, जिसमें कोको मुख्य भूमिका में है। वह आठ साल का एक बर्मी लड़का है। उसके तीन दोस्त हैं—नीनी, तिन सू और मिमि । नीनी और तिन सू बर्मी लड़के हैं और मिमि बर्मी लड़की। उ बा तुन जनता की दुकान का प्रबंधक है।

एक दिन कोको अपने माता-पिता के खेत पर जाने के बाद उठता है। माँ की अनुपस्थिति में उसे घर की देखभाल करनी है। उसकी माँ उसके लिए चार चावल की रोटियाँ बनाकर अलमारी में रख गई है। कोको को चावल की रोटियाँ बेहद पसंद हैं। वह झट बैठ जाता है उन्हें खाने के लिए। तभी उसे दरवाजे पर किसी की दस्तक सुनाई देती है। वह दरवाजा खोलने से पहले उन रोटियों को छिपा देता है। फिर दरवाजा खोलता है। दरवाजे पर नीनी होता है। वह तुरंत कोको से पूछ बैठता है कि उसने दरवाजा खोलने में इतनी देर क्यों लगाई। कोको झूठ बोल जाता है कि वह नाश्ता करके मुँह धोने लगा था। नीनी उसके पास रेडियो पर परीक्षा संबंधी सूचना के बारे में जानकारी लेने आया है। कोको बहाना बनाता है। कि उसका रेडियो खराब हो गया है। नीनी को खबर जरूर सुनना है। अतः वह फौरन तिन सू के घर चला जाता है।

कोको राहत की साँस लेता है और फिर चावल की रोटियाँ लेकर खाने बैठने ही वाला है कि दरवाजे पर दस्तक सुनाई देती है। इस बार मिमि है। कोको फिर रोटियाँ छिपाने के बाद दरवाजा खोलता है। नीनी की तरह मिमि भी पूछ बैठती है कि उसने दरवाजा खोलने में देर क्यों लगाई। कोको फिर वही बहाना लगाता है जो नीनी के पूछने पर लगाया था। आगे मिमि उसे बताती है कि अभी-अभी उसकी माँ मुझे मिली थीं। उन्होंने बताया कि तुम्हारे लिए चावल की कुछ रोटियाँ

रखी हैं। कोको तपाक से बोल पड़ता है कि रोटियाँ तो थीं परन्तु मैंने सब खा लीं । मिमि कहती है कि अकेले-अकेले खाना बुरी बात होती है। मेरी माँ ने मुझे चार केले के पापड़ दिए-दो तुम्हारे लिए और दो मेरे लिए। चावल की रोटियों के साथ केले के पापड़ का नाश्ता बड़ा अच्छा होता। खैर तुम्हारा पेट तो भरा हुआ है और तुम कुछ भी नहीं खा सकते। कोको मन ही मन पछताने लगता है। उसका पेट भूख से गुड़गुड़ करने लगा था। मिमि एक पापड़ उठाकर कोको से चाय माँगती है। कोको उसे बताता है कि चाय अलमारी पर रखी है। मिमि स्वयं चाय पीने लगती है और कोको से कहती है। कि तुम्हारा पेट बहुत भरा हुआ है।अतः चाय भी मत पिओ। उसी समय कोको का पेट फिर गुड़गुड़ करने लगता है। मिमि के पूछने पर बताता है कि हमारे घर में चूहा घुस आया है। वही यह आवाज कर रहा है। दरवाजे पर फिर दस्तक होती है। इस बार तिन सू होता है। वह गेंदे के फूलों का गुच्छा लाता है। मिमि उसे केले का पापड़ देती है और एक कप चाय। तिन सू फूलदान में फूल लगाने के लिए बढ़ता है। कोको उसे रोक देता है क्योंकि वहीं पर उसने रोटियाँ छिपाई हैं। दरवाजे पर फिर दस्तक होती है। कोको दरवाजा खोलता है और उ बा तुन (दूकान का प्रबंधक) को पाता है। वह कोको से कहता है कि तुम्हारी माँ हमारी दुकान से एक फूलदान लाई थी। वे नीला फूलदान चाहती थीं। लेकिन उस समय वह मेरे पास नहीं था। अतः वे गुलाबी फूलदान ले आईं। मेरे पास अब नीला फूलदान आ गया है। मैं उसे बदलने के लिए आया हूँ। इतना कहकर उ बा तुन गुलाबी फूलदान उठाकर उसकी जगह नीला फूलदान रख देता है। फूलदान के साथ कोको की चावल की रोटियाँ भी चली गईं। कोको को इस बात से बहुत दुख होता है क्योंकि वह सभी (चारों) रोटियाँ खाने के चक्कर में एक भी नहीं खा पाता है।

कठिन शब्द लिखिए

- प्रबंधक
- दस्तक देना
- बदकिस्मती
- नेकी
- एतराज
- तश्तरी

शब्दार्थ लिखिए

- प्रबंधक- व्यवस्था करनेवाला
- दस्तक देना-दरवाज़ा खटखटाना
- भुक्खड- भूखा
- बदकिस्मती- बुरी किस्मत
- इर्द-गिर्द-आसपास
- नेकी-भलाई
- एतराज़-आपत्ति,परेशानी

वैकल्पिक प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

१ : कोको के घर सबसे पहले किसका आगमन हुआ?

उत्तरः (क) मिमि का (ख) नीनी का

(ग) तिन सू का (घ) उ बात तुन का

२ : कोको की माँ ने चावल की रोटियाँ बनाकर रखने की बात किससे कही थी?

उत्तरः (क) कोको से (ख) नीनी से

(ग) मिमि से (घ) तिन सू की माँ से

३ : मिमि ने पापड़ निगलने के लिए किस चीज़ की माँग की?

उत्तरः (क) दूध की (ख) कोल्ड ड्रिंक्स की

(ग) पानी की **(घ) चाय की**

निम्नलिखित प्रश्नो के अति लघु उत्तर लिखिए।

१ कोको के माता-पिता किस काम से, कहाँ गए थे?

उ-कोको के माता-पिता धान लगाने खेत में गए थे।

२ कोको ने पहली बार रोटियाँ छिपाकर कहाँ रखी थीं?

उ-कोको ने पहली बार रोटियाँ रेड़ियों के पिछे छिपा के रखी थी।

३ मिमि को पापड़ खाते हुए कैसी आवाज़ सुनाई दी?

उ-मिमि को पापड़ खाते समय हल्की सी गुड़गुडाने की आवाज़ सुनाई दी।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

१ कोको ने नीनी के आने पर दरवाज़ा देर से क्यों खोला?

उ-नीनी के आने पर कोको ने देर से दरवाजा खोला क्योंकि उसे चावल की रोटियाँ - छिपानी थी।

२ नीनी कोको के घर क्यों गया था?

उ-नीनी कोको के घर परीक्षा की खास खबर सुनने गया था।

३ कोको ने घर में चूहे के घुसने की बात किससे की और क्यों?

उ-कोको का पेट भूख से गुड़गुड़ा रहा था। उसने मिमि से झूठ कहा कि घर में चूहा आ गया है।वही ये आवाज खड़बड़-गड़गड़ कर रहा है।

निम्नलिखित प्रश्नो के दीर्घ उत्तर लिखिए।

१ कोको ने रेडियो खराब होने और उसमें करंट आने की बात किससे कही और क्यों?

उ-कोको ने रेडियो खराब होने की बात नीनी से कही थीं क्योंकि रेड़ियो के पीछे कोको ने रोटियाँ छिपाई थी इसलिए कोको ने कहा रेड़ियो खराब है उसमें करंट आ रहा ह।

२ कोको दवारा बार-बार रोटियाँ छिपाने का क्या कारण था?

उ-कोको को बहुत भूख लगी थी, उसकी मम्मी उसके लिए चावल की रोटियाँ बनाकर रख गई थी। बार-बार कोई न कोई उसके घर का दरवाज़ा खटखटाता था। कोको किसी के साथ मिल बाँटकर रोटियाँ खाना चाहता था, इस कारण उसे रोटियाँ छिपानी पड़ती थी।

३ कोको का फूलदान क्यों बदल गया? उससे उसे क्या नुकशान उठाना पड़ा?

उ-कोको की माँ ने दुकानदार से नीला फूलदान माँगा था,परंतु दुकानदार ने कुछ समय के लिए गुलाबी रंग का फूलदान दे दिया था। कोको ने जब रोटियाँ छिपाई थी तभी दुकान का मैनेजर आकर नीले फूलदान रख गया और गुलाबी फूलदान वापस लेगया, इस तरह रोटियाँ भी साथ चली गई।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१ : नीनी के घर मे रेडियो नही था। (गलत)

२ : कोको पेट भरा हुआ बताकर पछता रहा था। (सही)

३ : तिन सू के आने पर मिमि ने दरवाजा खोला। (सही)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१ : **चावल** की रोटियाँ कोको का मनपसंद भोजन था।

२ : मिमि कागज का बंडल खोलती है और **पापड़** निकालती है।

३ : कोको के पेट गुडगुडाने की आवाज सबसे पहले **मिमि** ने सुनी थी।

४ : उ बात ुन **नीला** फूलदान लिए आता है।

व्याकरण विभाग

क्रिया-विशेषण

क्रिया-विशेषण : क्रिया की विशेषता बताने शब्द क्रिया विशेषण कहलाते है।

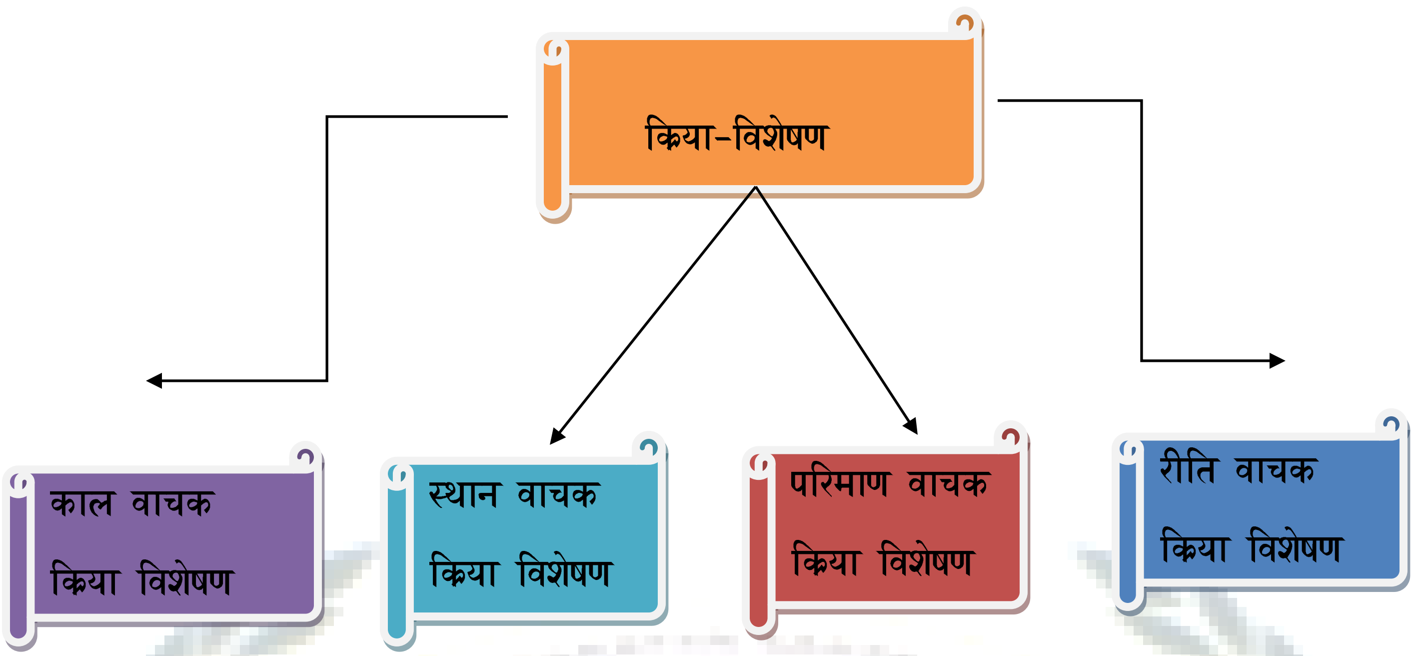

- **काल वाचक क्रिया विशेषण :** जो शब्द क्रिया के होने के काल समय का बोध कराता है,वे काल वाचक क्रिया विशेषण कहलाते है।

उदाहरण : प्रभा प्रतिदिन पढती है।

कुणाल बाजार से अभी लौटा है।

प्रियका सदा मुसकराती रहती है।

क्या तुम कल लौटोगे।

- **स्थान वाचक क्रिया विशेषण :** जो शब्द क्रिया के होने के स्थान का बोध कराता है,वे स्थान वाचक क्रिया विशेषण कहलाते है।

उदाहरण : बच्चा सीढियो से ऊपर चढ गया।

वहाँ मत बैठिए।

मनदीप इस ओर चला आर हा है।

रीना बाहर खेल रही है।

- **परिमाण वाचक क्रिया विशेषण :** जो शब्द किंया की मात्रा परिमाण बताते है, वे परिमाण वाचक किंया विशेषण कहलाते है।

उदाहरण : संदीप ने खुब पानी पिया।

इस बार गरमी अधिक पड़ रही है।

मैने आज कम भोजन किया।

टीना बहुत खाँस रही है।

- **रीतिवाचक क्रिया विशेषण :** जो शब्द क्रिया के होने के रीति का बोध कराते है ,वे रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते है।

उदाहरण : फूलदान जोर से गिरा।

दादी धीरे-धीरे कमरे की ओर बढी।

चुटकुला सुनकर सभी हसँते हसँते लोटपोट हो गए।

नकुल झूमता हुआ गाने लगा।

लेखन विभाग

संवाद- लेखन

संवाद-लेखन (Dialogue Letter) की परिभाषा

दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच हुए वार्तालाप या सम्भाषण को संवाद कहते हैं।
दूसरे शब्दों में- दो व्यक्तियों की बातचीत को 'वार्तालाप' अथवा 'संभाषण' अथवा 'संवाद' कहते हैं।

संवाद का सामान्य अर्थ बातचीत है। इसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति भाग लेते है। अपने विचारों और भावों को व्यक्त करने के लिए संवाद की सहायता ली जाती है। जो संवाद जितना सजीव, सामाजिक और रोचक होगा, वह उतना ही अधिक आकर्षक होगा। उसके प्रति लोगों का खिंचाव होगा। अच्छी बातें कौन सुनना नहीं चाहता ? इसमें कोई भी व्यक्ति अपने विचार सरल ढंग से व्यक्त करने का अभ्यास कर सकता है।

संवाद के अनेक नाम हैं : वर्तालाप, आलाप, संलाप, कथोपकथन, गुफ्तगू, सम्भाषण इत्यादि। यह कहानी, उपन्यास, एकांकी, नाटकादि की जान है। इसके माध्यम से पात्रों की सोच, चिन्तन-शैली, तार्किक क्षमता और उसके चरित्र का पता चलता है। नाटकों के संवादों से कथावस्तु का निर्माण होता है।

संवाद के वाक्यों में स्वाभाविकता होनी चाहिए, बनावटीपन नहीं। लम्बे-लम्बे कठिन और उलझे हुए संवाद प्रायः बनावटी हुआ करते हैं। अच्छा संवाद-लेखक ही नाटक, रेडियो नाटक, एकांकी तथा कथा-कहानी लिखने में कुशलता हासिल करता है।

1 .रोगी और वैद्य

रोगी-(औषधालय में प्रवेश करते हुए) वैद्यजी, नमस्कार!

वैद्य- नमस्कार! आइए, पधारिए! कहिए, क्या हाल है ?

रोगी- पहले से बहुत अच्छा हूँ। बुखार उतर गया है, केवल खाँसी रह गयी है।

वैद्य- घबराइए नहीं। खाँसी भी दूर हो जायेगी। आज दूसरी दवा देता हूँ। आप जल्द अच्छे हो जायेंगे।

रोगी- आप ठीक कहते हैं। शरीर दुबला हो गया है। चला भी नहीं जाता और बिछावन पर पड़े-पड़े तंग आ गया हूँ।

वैद्य- चिंता की कोई बात नहीं। सुख-दुःख तो लगे ही रहते हैं। कुछ दिन और आराम कीजिए। सब ठीक हो जायेगा।

रोगी- कृपया खाने को बतायें। अब तो थोड़ी-थोड़ी भूख भी लगती है।

वैद्य- फल खूब खाइए। जरा खट्टे फलों से परहेज रखिए, इनसे खाँसी बढ़ जाती है। दूध, खिचड़ी और मूँग की दाल आप खा सकते हैं।

रोगी- बहुत अच्छा! आजकल गर्मी का मौसम है; प्यास बहुत लगती है। क्या शरबत पी सकता हूँ ?

वैद्य- शरबत के स्थान पर दूध अच्छा रहेगा। पानी भी आपको अधिक पीना चाहिए।

रोगी- अच्छा, धन्यवाद! कल फिर आऊँगा।

वैद्य- अच्छा, नमस्कार।

2 .गुरुघंटाल और मस्तीलाल के बीच संवाद

गुरुघंटाल- आओ, आओ मस्ती, कहो, क्या हाल-चाल है ?

मस्तीलाल- ठीक कहाँ है गुरु ! आजकल बड़ा ही परेशान रह रहा हूँ।

गुरुघंटाल- किस बात की परेशानी ?

मस्तीलाल- बाल-बच्चों के भविष्य की चिन्ता सता रही है।

गुरुघंटाल- क्या हुआ उन्हें ? सब कुछ ठीक-ठाक तो है न ?

मस्तीलाल- ठीक क्या खाक रहेगा गुरु ! इस बार फिर मेरे दोनों बेटे इंटर फैल हो गए।

गुरुघंटाल- मैं तो कहता हूँ, छोड़ दे दोनों को पढ़ाना-लिखाना। बना दे उन्हें नेता। राजनीति में सब चलता है।

मस्तीलाल- समझ में नहीं आता कि किस पार्टी के आला-कमान से बात करूँ।

गुरुघंटाल- इसमें समझने की क्या बात है- उगते सूरज को देख और दिशा तय कर।

मस्तीलाल- तुम ठीक कहते हो गुरु, अब भाजपा-लोजपा में भी वो बात नहीं रही। आज ही जाता हूँ दिल्ली और....

गतिविधि- **चावल की रोटियाँ का चित्र बनाओ अथवा चिपकाओ।**

कविता-१२
गुरू और चेला
कवि-सोहन लाल दविवेदी

पाठ का सारः एक थे गुरु और एक था उनका चेला। एक दिन बिना पैसे के वे घूमने निकल पड़े। चलते-चलते वे एक नगर में पहुँच गए। वहाँ उन्हें एक ग्वालिन मिली। उसने उन्हें बताया कि यह अंधेर नगरी है और इसका राजा बिल्कुल मूर्ख (अनबूझ) है। इस नगरी में सभी चीजों का दाम एक टका है। गुरुजी ने सोचा ऐसी नगरी में रहना ठीक नहीं है। अतः उन्होंने अपने चेले से वहाँ से चलने को कहा। चेले ने बात नहीं मानी। गुरुजी चले गए परन्तु चेला उसी नगरी में रह गया।

एक दिन चेला बाजार में गया। वहाँ उसने देखा कि सभी चीजें टके सेर मिल रही हैं। चाहे वह खीरा हो या रबड़ी मलाई। चेले को सब कुछ अजीब लग रहा था।

उस साल बरसात में खूब बारिश हुई। नतीजा यह हुआ कि राज्य की एक दीवार गिर गई। राजा ने संतरी को फौरन बुलाया और उससे दीवार गिरने का कारण पूछा। संतरी ने कारीगर को दोषी ठहराया। फिर कारीगर को बुलाया गया। उसने भिश्ती को दोषी ठहराया क्योंकि उसने गारा गीला कर दिया। भिश्ती ने मशकवाले पर दोष मढ़ा जिसने ज्यादा पानी की मशक बना दी थी। मशकवाले ने मंत्री को दोषी बताया क्योंकि उसी ने बड़े जानवर का चमड़ा दिलवाया था। फौरन मंत्री को बुलाया गया। वह अपने बचाव में कुछ न कह सका। अतः जल्लाद उसे फाँसी पर चढ़ाने चला। मगरे मंत्री इतना दुबला था कि उसकी गर्दन में फाँसी का फंदा आया ही नहीं। राजा ने आदेश दिया कि कोई मोटी गर्दन वाले को पकड़ लाओ और उसे फाँसी पर चढ़ा दो।

संतरी मोटी गर्दन वाले की खोज में निकल पड़े। अचानक उन्हें चेला दिख गया। उसकी गर्दन मोटी थी। उन्होंने चेले को पकड़कर राजा के सामने प्रस्तुत किया। राजा ने उसे फाँसी पर चढ़ा देने का आदेश दे दिया। बेचारा चेला कठिन परिस्थिति में फँस गया। मगर वह चालाक था। उसने कहा कि फाँसी पर चढ़ाने से पहले मुझे मेरे गुरुजी का दर्शन कराओ।

गुरुजी को बुलाया गया। उन्होंने चेले के कान में कुछ मंत्र गुनगुनाया। फिर गुरु-चेला आपस में झगड़ने लगे। गुरु कहता था मैं फाँसी पर चढ़ेगा और चेला कहता था कि मैं। राजा कुछ देर तक उनका झगड़ा देखता रहा। फिर उसने उन दोनों को अपने पास बुलाया और झगड़ा का कारण पूछा तो गुरु ने कहा कि यह बहुत ही शुभ मुहूर्त है। इस मुहूर्त में जो फाँसी पर चढ़ेगा वह रोजा नहीं बल्कि चक्रवर्ती बनेगा। पूरे संसार का छत्र उसके सिर चढ़ेगा। मूर्ख राजा बोल पड़ा-यदि ऐसी बात है तो मैं फाँसी पर चढ़ेगा। राजा को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। इधर प्रजा में खुशी की लहर दौड़ गई। आखिरकार उन्हें ऐसे मूर्ख राजा से मुक्ति मिल गई।

काव्यांशों की व्याख्या :- एक गुरु थे और उनका एक चेला था। दोनों के पास एक भी पैसा नहीं था। फिर वे घूमने निकल पड़े। चलते-चलते वे एक नगर में पहुँच गए। नगर की सड़कें चमक रही थीं। उन्हें एक ग्वालिन

दिख गई। उसके सिर पर घड़ा था। गुरु ने ग्वालिन को रोककर पूछा कि यह कौन-सी नगरी है और यहाँ का राजा कौन है? यहाँ किसकी प्रसिद्धि का डंका बजता है?

गुरु ने जब ग्वालिन से पूछा कि यह कौन-सी नगरी है और यहाँ का राजा कौन है तो ग्वालिन ने बढ़कर कहा- महाराज पंडित, भले ही आप यहाँ आए हैं लेकिन यह अंधेर नगरी है। इसका राजा निरा मूर्ख है। यहाँ सब कुछ टके सेर मिलता है, चाहे वह भाजी हो या खाजा। सुनकर गुरु का माथा ठनका। उन्होंने सोचा कि यहाँ रहना उचित नहीं क्योंकि किसी भी पल अंधेर अर्थात् कुछ भी अनर्थ हो सकता है। अतः उन्हें ऐसी मुसीबत में पड़कर जान नहीं देनी है। यहाँ से फौरन चल देना चाहिए।

ग्वालिन से यह जानने पर कि यह अंधेर नगरी है और यहाँ का राजा मूर्ख है, गुरु ने तुरंत उस जगह को छोड़ने का निर्णय ले लिया। उसने चेले से चलने को कहा। परन्तु वह माना नहीं। गुरुजी चले गए और चेला रह गया। एक दिन वह उस नगरी का बाज़ार देखने निकला। वह हैरान रह गया यह जानकर कि वहाँ सब कुछ टके सेर बिक रहा था चाहे वह खीरा हो या ककड़ी, हल्दी हो या जीरा।।

उस अंधेर नगरी में सब कुछ टके सेर मिलता था। अतः चेले ने खूब रबड़ी मलाई खाई। कवि कहता है कि अब आप मूर्ख राजा की अंधेर नगरी का आगे का ताजा हाल सुनिए। उस साल वहाँ खूब बरसात हुई। खूब पानी बरसता । था, खूब बिजली चमकती थी और खूब बादल गरजते थे।

उस अंधेर नगरी में बरसात के दौरान इतनी भारी बारिश हुई कि राज्य की एक दीवार गिर गई। राजा तुरंत वहाँ पहुँच गया। उसने संतरी को बुलाया और उससे दीवार गिरने का कारण पूछा। संत्री ने झट जवाब दिया कि दीवार उसकी गलती से नहीं गिरी है। दरअसल दीवार कमजोर बनी थी मोटी और घनी नहीं। इसीलिए गिर गई।

जब राजा ने संतरी से दीवार गिरने का कारण पूछा तो उसने कहा कि दीवार कमजोर बनी थी। इसीलिए गिर गई। इसमें गलती उसकी नहीं बल्कि कारीगर की है। कारीगर को फौरन बुलाया गया। राजा ने आदेश दे दिया कि कारीगर को सजा दो। इसकी गलती से दीवार गिरी है अतः इसे मौत दो। कारीगर बिना एक झण विलंब किए बोल पड़ा, महाराज! इसमें मेरी कोई गलती नहीं है।

जब राजा ने संतरी के माध्यम से जाना कि कारीगर की गलती से दीवार गिरी है तो उसने उसे फाँसी पर चढ़ाने का आदेश दे दिया। कारीगर ने तुरंत अपना बचाव किया। उसने भिश्ती को दोषी करार दिया। उसने राजा से कहा-उसकी गलती से दीवार गिरी है क्योंकि उसी ने गारा गीला कर दिया। राजा के आदेश पर भिश्ती को बुलाया गया। भिश्ती को देखते ही राजा ने उसे फाँसी पर चढ़ाने का हुक्म दे दिया। भिश्ती ने कहा-इसमें मेरी गलती नहीं है बल्कि मशक बनाने वाले की गलती है। उसी ने इतनी बड़ी मशक बना दी कि उसमें पानी ज्यादा समा गया जिसके कारण दीवार कमजोर हो गई और गिर गई।

भिश्ती बरी हो गया और उसके कहने पर मशकवाले को बुलाया गया। उसने भी चतुराई से अपना बचाव किया। कहा-दीवार गिरने में मेरी नहीं बल्कि मंत्री की गलती है। यह उन्हीं की भूल और उन्हीं की लापरवाही है।

उन्होंने ही मुझे बड़े जानवर का चमड़ा दिलवा दिया। मैंने चमड़ा चुराया नहीं और एक बड़ी मशक बना दिया। इस मशक में पानी ज्यादा भरता है। इस प्रकार यह गलती मेरी नहीं बल्कि किसी और की है।

जब राजा को बताया गया कि दीवार मंत्री की वजह से गिरी है तो उसने मंत्री को हाजिर होने का आदेश दिया। मंत्री आया तो राजा ने उसे फाँसी पर चढ़ा देने को कहा। सुनकर फौरन जल्लाद आ गया और मंत्री को उसी क्षण लेकर चला फाँसी पर चढ़ाने के लिए। किन्तु मंत्री काफी दुबला था। उसकी गर्दन इतनी पतली थी कि फाँसी के फंदे में नहीं आ पाती थी। अतः राजा ने उसकी जगह किसी मोटी गर्दन वाले को पकड़कर लाने को कहा ताकि उसे अच्छी तरह फाँसी पर चढ़ाया जा सके।

अब संतरी मोटी गर्दन वाले व्यक्ति की खोज में निकल पड़े। बहुत जल्दी उन्हें चेला हलुआ खाते हुए मिल गया। उन्होंने चेले से कहा-महाराज ने आपको न्यौता दिया है। अतः फौरन आप चुले चलिए। चेला मन ही मन खुश हुआ। यह सोचकर कि राजा के दरबार में खूब छककर खायेगा। लेकिन आकर देखा तो वहाँ एक नया झमेला खड़ा था। चारों तरफ लोगों की भीड़ उमड़ी थी।

मोटी गर्दन वाले चेला को देखकर राजा ने तुरंत उसे फाँसी पर चढ़ाने का आदेश दे दिया। चेले ने राजा से पूछा कि आखिर मेरी गलती क्या है? कम-से-कम मेरी गलती तो बतायें। राजा ने फौरन यह कहकर उसे चुप करा दिया कि ज्यादा बकबक मत करो। लेकिन चेला बुद्ध नहीं था, चालाक था। उसने वहीं पर एक बड़ा झमेला खड़ा कर दिया। कहा मुझे फाँसी पर चढ़ाने से पहले मेरे गुरु के दर्शन कराओ।

चेले के कहने पर उसके गुरुजी को बुलाया गया। उन्होंने चेले को रोते हुए पाया। उन्होंने उसे अपने पास, बुलाया और कान में कुछ मंत्र गुनगुनाया। फिर दोनों की आपस में भिडंत हो गई। दोनों जमकर लड़ने लगे। गुरु कहता था-मैं फाँसी पर चढ़ेगा। दोनों में से कोई अपनी जिद छोड़ने को तैयार न था।

फाँसी पर चढ़ने के लिए गुरु और चेले में भिडंत हो गई। दोनों ऐसे लड़ने लगे कि हटाने से भी नहीं हटते थे। राजा ने बढ़कर पूछा कि आखिर बात क्या है? इस पर गुरु ने बताया कि यह फाँसी पर चढ़ने का शुभ मुहूर्त है। इस ।। मुहूर्त में जो फाँसी पर चढ़ेगा वह राजा नहीं चक्रवर्ती बनेगा। उसके सिर पर पूरे संसार का ताज होगा।

जब राजा को गुरु जी से पता चला कि इस शुभ मुहूर्त में फाँसी पर चढ़ने वाला चक्रवर्ती राजा बनेगा तो उसने कहा-अगर यह बात सच है तो मैं स्वयं इसी क्षण फाँसी पर चढ़ेगा। इस प्रकार राजा फाँसी पर चढ़ गया। प्रजा में खुशी की लहर दौड़ गई। मूर्ख राजा के मरते ही घर-घर में बधाई का बाजा बजने लगा।

कठिन शब्द लिखिए

- चेला
- विवश
- हाट
- खता
- करतब
- कज़ा
- भिश्ती
- गफ़लत

- हिकमत
- जल्लाद

शब्दार्थ लिखिए

- चेला-शिष्य
- धेला-पैसा
- डगरी-राह, रास्ता
- गगरी-घड़ा
- सुयश-प्रसिद्धि
- विवश-मजबूर
- हाट-बाजार
- खता-गलती
- कज़ा-मृत्य
- भिश्ती-पानी ढ़ोने वाला
- गफ़लत-भल
- हिकमत-चतुराई
- जल्लाद-फासी चढ़ानेवाला
- दनादन-जल्दी-जल्दी
- बिरानी-परायी

वैकल्पिक प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

१ : गुरू और चेला जिस नगरी मे पहुँचे ,उसकी सडके कैसी थी?

उत्तरः (क) गंदी (ख) चमाचम

(ग) ऊँची-नीची (घ) पतली

२ : संतरी ने चेले को क्या खाते देखा?

उत्तरः (क) खाजा (ख) मलाई

(ग) ककड़ी (घ) हलवा

३ : चेला कैसा था?

उत्तरः (क) चालाक (ख) बुद्धू

(ग) दुष्ट (घ) लड़ाकू

४ : संतरी के सम्मुख कौन झगड रहे है?

उत्तरः (क) संतरी और कारीगर (ख) गुरू और चेला

(ग) मंत्री और मशकवाला (घ) भिश्ती और चेला

५ : गुरू के अनुसार ,फाँसी पर चढ़ने वाला व्यकित कैसा राजा बनता?

उत्तरः (क) छोटा (ख) बड़ा

(ग) प्रसिद्ध (घ) चक्रवर्ती

निम्नलिखित प्रश्नो के अति लघु उत्तर लिखिए।

१ चेले ने किसकी कौन-सी बात नहीं मानी?

उ-चेले ने गुरु की बात नहीं मानी कि इस अंधेर नगरी में एक पल भी नहीं रहना चाहिए।

२ राजा ने संतरी को बुलाकर क्या पूछा?

उ-राजा ने संतरी को बुलाकर पूछा कि, "यह दीवार कैसे गिरी, इस दीवार को किसने बनाया।"

३ दीवार गिरने के अपराध में सबसे पहले किसे, क्या सज़ा सुनाई गई?

उ-दीवार गिरने के अपराध में सबसे पहले कारीगर को सज़ा सुनाई गई।

४ मशक वाले ने किसे दोष दिया?

उ-मशक वाले ने मंत्री को दोषी ठहराया।

निन्मलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

१ अंधेर नगरी से परिचित होने के बाद गुरु ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?

उ-अंधेर नगरी से परिचित होने के बाद गुरुजी ने कहा यहाँ रहना खतरे से खाली नहीं है, जहाँ सभी चीजें टके सेर बिकती हो।

२ अंधेर नगरी में स्थित हाट की क्या विशेषता थी?

उ-अंधेर नगरी में स्थित हाट में सभी वस्तु टके सेर बिकती थी। मिठाई हो, भाजी हो, जीरा हो, ककडी हो, सभी किंमती मामूली वस्तु का एक ही मूल्य टके से।

३ भिश्ती को फाँसी क्यों दी जा रही थी?

उ-भिश्ती ने दीवार बनाने का गारा ज्यादा गीला कर दिया था।जिससे दीवार कमजोर रही और गिर गई। इसी दोष के लिए भिश्ती को फाँसी दी जा रही थी।

४ मंत्री की जान कैसे बची?

उ-मंत्री बहुत पतला-दुबला था। फाँसी का फंदा बड़ा बना जो मंत्री की गर्दन में नहीं बैठ रहा था। इस तरह मंत्री की जान बची।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१ : ग्वालिन ने गुरू -चेले को नगरी के बारे मे बताया। (सही)

२ : नगरी मे भाजी का मूल्य खाजा से अधिक था। (गलत)

३ : हाट मे खूब भीड़ थी। (सही)

४ : राजा पैदल चलकर दीवार के पास पहँचा था। (गलत)

५ : चेले ने गुरू के कान मे मंत्र गुनगुनाय था। (गलत)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१ : ग्वालिन के सिर पर **गगरी** थी ।

२ : गुरू को **विवश** होकर नगरी से लौट जाना पडा।

३ : मंत्री देखने मे बहुत **दुबला** था।

४ : चेले की **गर्दन** मोटी थी।

व्याकरण विभाग

शब्द-निर्माण

शब्द निर्माण – उपसर्ग , प्रत्यय , संधि , समास

अतः शब्दों के आरंभ अथवा अंत में कुछ जोड़कर अथवा उनकी मात्राओं या स्वर में कुछ परिवर्तन करके नवीन-से-नवीन अर्थ-बोध कराना चाहते हैं। ... इस तरह एक शब्द से कई अर्थों की अभिव्यक्ति हेतु जो नए-नए शब्द बनाए जाते हैं उसे शब्द-रचना कहते हैं।

अथवा

शब्द-रचना-हम स्वभावतः भाषा-व्यवहार में कम-से-कम शब्दों का प्रयोग करके अधिक-से-अधिक काम चलाना चाहते हैं। अतः शब्दों के आरंभ अथवा अंत में कुछ जोड़कर अथवा उनकी मात्राओं या स्वर में कुछ परिवर्तन करके नवीन-से-नवीन अर्थ-बोध कराना चाहते हैं। कभी-कभी दो अथवा अधिक शब्दांशों को जोड़कर नए अर्थ-बोध को स्वीकारते हैं। इस तरह एक शब्द से कई अर्थों की अभिव्यक्ति हेतु जो नए-नए शब्द बनाए जाते हैं उसे शब्द-रचना कहते हैं।

शब्द रचना के चार प्रकार हैं-

1. उपसर्ग लगाकर
2. **प्रत्यय लगाकर**
3. **संधि द्वारा**
4. **समास द्वारा**

- **उपसर्ग : व्युत्पत्ति के आधार पर मुख्य रूप से शब्द के दो मूल रूप होते हैं, रूढ़ और यौगिक। रूढ़ शब्द किसी के मेल से नहीं बनते, ये स्वतंत्र होते हैं। लेकिन यौगिक शब्दों की रचना रूढ़ शब्द के आदि व अंत में जुड़ने वाले शब्दांशों से होती है। ये शब्दांश रूढ़ शब्द से मिलकर इसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं।**

अथवा :

शब्दों के आदि में जुड़कर शब्दों के अर्थ में विशेषता लाने वाले शब्दांश 'उपसर्ग' कहलाते हैं। इन उपसर्गों का अलग से प्रयोग नहीं किया जा सकता अर्थात् स्वतंत्र रूप में इनका कोई विशेष महत्त्व नहीं होता। हिंदी में

मुख्य रूप से संस्कृत तत्सम शब्द पाए जाते हैं। इसके अलावा हिंदी तथा उर्दू तत्सम शब्दों का भी प्रयोग होता है।

जैसे: श्रम से बने ये शब्द:

- परि + श्रम = परिश्रम
- परि + श्रमी = परिश्रमी
- श्रम + इक = श्रमिक
- श्रम + जीवी = श्रमजीवी
- श्रम + शील = श्रमशील

उपसर्ग	अर्थ	शब्द रूप
अ	(नहीं, अभाव, हीन, विपरीत)	अखंड, अनाथ, अथाह, अधर्म, अदृश्य, अडिग, अचल, अलौकिक।
अन्	(नहीं, अभाव)	अनाचार, अनपढ़, अनादि, अनमोल, अनेक, अनावश्यक, अनिच्छा, अनुपस्थिति।
अधि	(ऊपर, समीप, बड़ा)	अधिकरण, अधिकार, अधिपति, अधिनायक।
अति	(अधिक, ऊपर)	अतिशय, अतिरिक्त, अतिक्रमण, अतिचार, अत्यधिक।

अनु	(पीछे, समान)	अनुकरण, अनुगामी, अनुकंपा, अनुशीलन, अनुराग, अनुज, अनुगमन।
अभि	(तरफ, सामने, समीप)	अभियोग, अभिनेता, अभिमान, अभिनव, अभिमुख।
अप	(बुरा, हीन, अभाव, विपरीत)	अपव्यय, अपकीर्ति, अपमान, अपयश, अपवाद, अपशब्द।
अव	(बुरा, नीचा, हीन)	अवगुण, अवनति, अवशेष, अवनत, अवसान।
अध	(आधा)	अधजला, अधमरा, अधपका, अधखिला, अधखाया।
उ	(अभाव, रहित)	उऋण, उजड़ा, उनींदा।
कु	(बुरा, बुराई, निचला)	कुपात्र, कुख्यात, कुचाल, कुकर्म, कुमार्ग, कुअवसर।
दु	(बुरा, हीन)	दुबला, दुसह, दुकाल, दुसाध्य, दुर्जन, दुर्गम।
बिन	(निषेध के बिना)	बिनदेखा, बिनब्याहा, बिनजाना, बिनबोया, बिनखाया।

भर	(पूरा, ठीक)	भरपूर, भरमार, भरपेट।
स,सु	(अच्छा, उत्तम)	सपूत, सरल, सजग, सचेत, सरस, सुगम, सुकन्या, सुफल।
कम	(थोड़ा)	कमसिन, कमजोर, कमबख्त, कमउम्र।
ना	(नहीं, अभाव)	नापसंद, नासमझ, नालायक, नाजायज़, नाबालिग, नामुमकिन।
बद	(बुरा)	बदकिस्मत, बदचलन, बदतमीज, बदनाम, बदसूरत।
खुश	(प्रसन्न)	खुशकिस्मत, खुशहाल, खुशख़बरी, खुशनसीब, खुशबू।
बे	(बिना)	बेकसूर, बेरहम, बेईमान, बेनकाब, बेचारा, बेइज्जत।
ला	(बिना)	लापरवाह, लाइलाज, लावारिस, लाजवाब, लाचार।
हर	(प्रत्येक)	हररोज़, हरपल, हरसाल, हरदिन।

लेखन विभाग दशहरा

- दशहरा (विजयादशमी या आयुध-पूजा) एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिन्दू त्यौहार है जो पूरे भारत के लोगों के द्वारा हर साल बेहद हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।
- ये पर्व अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है ये एक धार्मिक और पारंपरिक उत्सव है जिसे हर बच्चों को जानना चाहिये।
- ऐतिहासिक मान्यताओं और प्रसिद्ध हिन्दू धर्मग्रंथ रामायण के अनुसार ऐसा उल्लिखित है कि भगवान राम ने रावण को मारने के लिये देवी चंडी की पूजा की थी।
- लंका के दस सिर वाले राक्षस राजा रावण ने अपनी बहन शूर्पणखा की बेइज्जती का बदला लेने के लिये राम की पत्नी माता सीता का हरण कर लिया था।
- तब से जिस दिन से भगवान राम ने रावण को मारा उसी दिन से दशहरा का उत्सव मनाया जा रहा है।
- दशहरा हिन्दुओं का बहुत महत्वपूर्ण और मायने रखने वाला त्यौहार है। इस पर्व का महत्व पारंपरिक और धार्मिक रुप से बहुत ज्यादा है।
- भारतीय लोग इसे बहुत उत्साह और भरोसे से मनाते है।
- ये पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत को भी प्रदर्शित करता है अर्थात् पाप पर पुण्य की जीत।
- लोग इसे कई सारे रीति-रिवाज और पूजा-पाठ के द्वारा मनाते है।
- धार्मिक लोग और भक्तगढ़ पूरे दिन व्रत रखते है
- कुछ लोग इसमें पहले और आखिरी दिन व्रत रखते है तो कुछ देवी दुर्गा का आशीर्वाद और शक्ति पाने के लिये इसमें पूरे नौ दिन तक व्रत रखते है।
- दसवें दिन लोग असुर राजा रावण पर राम की जीत के उपलक्ष्य में दशहरा मनाते है।
- दशहरा का पर्व हर साल सितंबर और अक्तूबर के अंत में दीवाली के दो सप्ताह पहले आता है।
- देश के कई बरसों में दशहरा को मनाने का रीति-रिवाज और परंपरा अलग-अलग है।
- कई जगहों पर पूरा दस दिन के लिए मनाया जाता है, मंदिर के पुजारियों द्वारा मंत्र और रामायण की कहानियां भक्तों की बड़ी भीड़ के सामने सुनाई जाती है साथ ही कई जगहों पर रामलीला का आयोजन 7 दिन या मौसम तक किया जाता है।
- सारे शहर में रामलीला का आयोजन होता है।
- राम लीला पौराणिक महाकाव्य, रामायण का एक लोकप्रिय अधिनियम है।
- ऐसा माना जाता है कि महान संत तुलसीदास ने राम, राम की परंपरा शुरू की, जो भगवान राम की कहानी के अधिनियम था।
- उनके द्वारा लिखी गई रामचरितमानस आज तक रामलीला प्रदर्शन का आधार बनाती हैं।
- रामनगर राम लीला (वाराणसी में) सबसे पारंपरिक शैली में अधिनियमित किया गया है।

गतिविधि-

पाठ-१३
स्वामी की दादी
लेखक-आर के नारायण

पाठ का सारः स्वामीनाथन की दादी एक बंद-सी कोठरी में अपने सामान के साथ रहती थीं। उनका सामान था–पाँच दरियाँ, तीन । चादरें, पाँच तकियों वाला भारी-भरकम बिस्तर और दो बक्से।।

एक दिन रात को भोजन के बाद स्वामीनाथन अपनी दादी की गोद में सिर रखे लेटा हुआ था और उनसे बातें कर रहा था। बातों के दौरान उसने दादी को राजम और मणि की पहले दुश्मनी और फिर दोस्ती की कहानी कह सुनाई। उसने दादी को यह भी बताया कि राजम के पास सचमुच की पुलिस की वर्दी है। उसके पिता पुलिस अधीक्षक हैं अर्थात् पुलिस के सबसे बड़े अफसर। पुलिस अधीक्षक, पुलिस के सबसे बड़े अफसर …' जैसी बातों ने दादी को बहुत प्रभावित किया। उनको अपने पुराने दिन याद आने लगे। उन्होंने पुरानी कहानी शुरू कर दीं जब स्वामीनाथन के दादा रौबदार सब-मजिस्ट्रेट थे और जिनके दफ्तर में पुलिस वाले काँपते हुए खड़े रहते थे। उन्होंने स्वामीनाथन को यह भी बताया कि उनसे (दादाजी)। डरकर खूखार से खूखार डाकू तक भाग खड़े होते थे। स्वामीनाथन दादी की कहानी से ऊबने

लगा। उसने उन्हें बीच में ही रोक दिया और राजम के बारे में बताने लगा। राजम को गणित में 100 में से 90 अंक मिलते हैं। इस पर दादी ने उसे सलाह दी कि तुम्हें भी इतने अच्छे नम्बर (अंक) लाने चाहिए। फिर उन्होंने उसके दादाजी के बारे में बताया कि कैसे वे कम-से-कम समय में सवालों का जवाब दे देते थे, और कैसे एम.ए. पास करने पर उनको बड़ा मेडल मिला था। दादी की बात जारी थी। कई सालों तक उस मेडल को मैं गले में पहनती रही। फिर उसे तुम्हारी बुआ को दे दी जो इतनी बेवकूफ निकलीं कि उसे गलवाकर फिर चूड़ियाँ बनवा लीं।

स्वामीनाथन फिर दादी की बातों से ऊबने लगा। उसने उन्हें फिर रोका और राजम के बारे में सुनने को बाध्य किया। राजम ने बचपन में शेर मारा था। जब उसके पिता एक जंगल में डेरा डाले हुए थे तो राजम भी उनके साथ था। अचानक दो शेर उन पर झपटे और एक ने पीछे से हमला करके उसके पिता को गिरा दिया। दूसरे ने राजम का पीछा किया। राजम ने एक झाड़ी में छिपकर शेर को गोली से मार गिराया। राजम की बहादुरी भरी कहानी पर भी जब दादी की

ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी तो स्वामीनाथन को लगा कि वह सो गई हैं। वे सचमुच सो गईं थीं, जिसके कारण स्वामीनाथन उनसे चिढ़ गया। उसने दादी से कहा कि तुम इसीलिए ऐसा कर रही हो क्योंकि तुम राजम को पसंद नहीं करती। लेकिन जब दादी ने विश्वास दिलाया कि राजम सचमुच बहुत प्यारा लड़का है तो स्वामीनाथन फिर खुश हो गया। उसके बाद दादी उसे हरिश्चंद्र की कहानी सुनाने लगीं। लेकिन बीच में ही स्वामीनाथन सो गया और खर्राटे भरने लगा।

कठिन शब्द लिखिए

- मजिस्ट्रेट
- रेशे
- खूँखार
- बेवकूफ
- अधीक्षक
- ऊलजलूल
- दफ्तर

शब्दार्थ लिखिए

- रेशे- पतल धागे
- वर्दी- एक सी युनिफार्मि
- दफ्तर- कार्यालय
- खूँखार- डरावना, खतरनाक
- बेवकूफ- मूर्ख
- ऊलजलूल- बेकार की
- मजिस्ट्रेट- दंडाधिकारी

वैकल्पिक प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

१ : स्वामीनाथन इलायची और लौग की गंध भरे वातावरण मे स्वंय को कैसा महसूस कर रहा था?

उत्तरः (क) दुखी और निराश (ख) **प्रसन्न और सुरक्षित**

(ग) डरा और असुरक्षित (घ) बेचेन और परेशान

२ : राजम किसका बेटा था?

उत्तर (क) वकील का (ख) सब-मजिस्ट्रेट का

(ग) पुलिस अधीक्षक का (घ) शिक्षक का

३ : राजम ने शेर को कहाँ से गोली मारी थी?

उत्तरः **(क) झाडी के पीछे से** (ख) पेड पर चढकर

(ग) जीप मे बैठकर (घ) उसके सम्मुख

४ :स्वामीनाथन किसके गलत जवाब से चिढ गया था?

उत्तरः (क) दादाजी **(ख) दादीजी**

(ग) पिताजी के (घ) माताजी

निन्मलिखित प्रश्नो के अति लघु उत्तर लिखिए।

१ स्वामीनाथन के दादा जी किस पद पर थे?

उ-स्वामीनाथन के दादा जी सब-मजिस्ट्रेट थे।

२ राजम को गणित में कितने नंबर मिलते थे?

उ-राजम को गणित में सौ में से नब्बे नंबर मिलते थे।

३ दादी ने जो मैडल बुआ को दिया, उसका उन्होंने क्या किया?

उ-दादी ने जो मैडल बुआ को दिया, उसको गलवाकर बुआ ने चार चुड़ियाँ बनवा ली थी।

निन्मलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

१-राजम की किससे दुश्मनी और फिर दोस्ती हुई थी? यह बात किसे, कौन बता रहा-था?

उ-राजम की मणि से पहले दुश्मनी थी फिर दोस्ती हुई यह बात स्वामीनाथन अपनी दादी को बता रहा है।

२- स्वामीनाथन किसके पास, कौन-सी वर्दी होने को बात कर रहा था? वह वर्दी उसके पास कहाँ से आई?

उ-स्वामीनाथन दादी को बता रहा था कि राजम के पिताजी पुलिस अधिक्षक थे,इसलिए राजम के पास पुलिस की वर्दी है।

३-दादी किसे महामूर्ख मानती थीं और क्यों?

उ-दादी अपनी बेटी यानी स्वामीनाथन की बुआ को महामूर्ख मानती थी क्योंकि दादी नेजो मैडल बुआ को एक याद के लिए दिया था और बुआ ने उस मैडल को गलवा कर चार चुड़ियाँ बनवा ली थी।

निम्नलिखित प्रश्नो के दीर्घ उत्तर लिखिए।

१-अपने विदयार्थी जीवन के बारे में स्वामीनाथन को किससे क्या जानकारी प्राप्त हुई?

उ-स्वामीनाथन को दादी ने दादाजी के बारे में बताया कि वह पढ़ाई में बहुत तेज थे। उन्हें उत्तर देने में बहुत कम समय लगता था। उनके उत्तर से परीक्षक भी चकित रह जाते थे और उन्हें दो सौ नंबर दे देते थे। एम ए में उन्हें मैडल भी मिला था।

२- राजम की वीरता की कहानी को अपने शब्दों में लिखिए।

उ- राजम एक छोटा,बहादुर और होशियार लड़का था। एक बार वह पिता के साथ जंगल में गया जहाँ दो शेरों से सामना हुआ। एक शेर ने पिता को गिरा दिया,दूसरे शेर ने राजम को पीछे धकेला,जिससे वह झाड़ियों के पीछे जा गिरा, वहाँ से उसने शेर पर गोली चला दी। इसतरह राजम ने एक शेर को मारा था।

3- दादी ने स्वामीनाथन को उसके दादा के उत्तर लिखने के संदर्भ में क्या बताया?

उ- दादी ने स्वामीनाथन को दादा के उत्तर लिखने के बारे में बताया कि उन्हें उत्तर देने में बहुत कम समय लगता था। उनके उत्तर से परीक्षक भी चकित रह जाते थे और उन्हें दो सौ नंबर दे देते थे। एम ए मे उन्हें मैड़ल भी मिला था।स

4-स्वामीनाथन के मन में दूसरे ही क्षण संदेह पैदा क्यों हुआ?

उ- स्वामीनाथन जब दादी को राजम की कहानी सुना रहा था तब उसे दादी का उत्तर सही न होने पर चिढ़ हुई थी। लेकिन जब दादी ने राजम को अच्छा बच्चा बताया तब स्वामीनाथन के मन में दूसरे ही क्षण संदेह हुआ कि शायद दादी को शेर की कहानी पसंद नहीं आती या इस कहानी पर दादी को विश्वास नहीं हो रहा है।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१ : दादी अपना सामान अपने साथ नही रखती थी। (गलत)

२ : दादी के छोटे बक्से म ताबें के सिक्के सहित इलायची ,लौंग और सुपारी रखे होते थे। (सही)

३ :स्वामीनाथन गणित मे राजम से ज्यादा तेज था। (गलत)

४ : दादी ने अपनी पुत्री के पैदा होने तक गले मे मैडल पहनना नही छोड़ा था। (सही)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१ : दादीजी के पास **पटसन** के रेशे का बना एक वर्गाकार बक्सा था।
२ :स्वामीनाथन अपनी दादी की गोद मे **सिर** रखकर लेटा था।
३ :दादी अलग-अलग समय पर घटी घटनाओ को **गडडमडड** करके सुना रही थी।
४ : स्वामीनाथन को **पुलिस** की कहानी सुनाते- सुनाते दादी स्वंय भी सो गई।

व्याकरण विभाग

प्रत्यय

- **प्रत्यय :** प्रत्यय वह शब्दांश हैं जो शब्द के अंत में जुड़कर उसके व्याकरणिक रूप या अर्थ में परिवर्तन कर देता हैं।
- प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं।
- **क्रत प्रत्यय :** जो धातु में जोड़े जाते हैं।
- **तद्वित प्रत्यय :** जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण में जोड़े जाते हैं।
- ***प्रत्यय के उदाहरण***

शब्द	**प्रत्यय**
लठैत	एत
सपेरा	एरा
कमाऊ	आऊ
तैराक	आक
भगोड़ा	ओड़ा

शब्द	**प्रत्यय**
चटोरा	ओरा
ससुराल	आल
पढ़ाई	आई
मिठाई	आई
बुढ़ापा	पा
लिखावट	आवट
चिकनाई	आई
ननिहाल	आल
गुणवान	वान
वीरता	ता
सुंदरता	ता
शक्तिशाली	शाली
कौन्तेय	एय
श्रद्धालु	लू

शब्द	**प्रत्यय**
कोचवान	वान
रखवाला	हारा
हलवाही	वही
लकड़हारा	हारा
गुरुत्व	त्व
कुशल	ल
कुलीन	ईन
भारतीय	ईय
पंकिल	इल
मिठास	आस
कौशल	अ
दयालु	लू
प्यासा	आ
लड़ाका	आका

शब्द	**प्रत्यय**
गंवार	आर
घबराहट	आहट
लुटिया	इया
तेली	ई
गुलाबी	ई
परिन्दा	इन्दा
शौकीन	ईन
यादगार	गार
तमाशबीन	बीन
साजिश	इश
पूज्य	य
पूजनीय	अनीय
देय	य
युगीन	ईन

शब्द	प्रत्यय
उच्चतम	तम
महत्तर	तर
लघुत्तर	तर
पंकिल	इल
फेनिल	इल
इकहरा	हरा

लेखन विभाग :अनुच्छेद लिखोः दीपावली

- दीपावली का त्योहार पांच दिनों तक चलने वाला सबसे बड़ा पर्व होता है।
- दशहरे के बाद से ही घरों में दीपावली की तैयारियां शुरू हो जाती है, जो व्यापक स्तर पर की जाती है।
- इस दिन भगवान श्रीराम, माता सीता और भ्राता लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण कर अयोध्या लौटे थे।
- इसके अलावा दीपावली को लेकर कुछ और भी पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं।
- यह त्योहार कार्तिक माह की अमावस्या के दिन मनाया जाता है।
- अमावस्या की अंधेरी रात जगमग असंख्य दीपों से जगमगाने लगती है।
- कहते हैं भगवान राम 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटे थे, इस खुशी में अयोध्यावासियों ने दीये जलाकर उनका स्वागत किया था।
- श्रीकृष्ण ने नरकासुर नामक राक्षस का वध भी इसी दिन किया था।
- यह दिन भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी है।
- इन सभी कारणों से हम दीपावली का त्योहार मनाते हैं।
- यह त्योहार लगभग सभी धर्म के लोग मनाते हैं।
- इस त्योहार के आने के कई दिन पहले से ही घरों की लिपाई-पुताई, सजावट प्रारंभ हो जाती है।
- नए कपड़े बनवाए जाते हैं, मिठाइयां बनाई जाती हैं।

- वर्षा के बाद की गंदगी भव्य आकर्षण, सफाई और स्वच्छता में बदल जाती है।
- लक्ष्मी जी के आगमन में चमक-दमक की जाती है।
- यह त्योहार पांच दिनों तक मनाया जाता है।
- धनतेरस से भाई दूज तक यह त्योहार चलता है।
- धनतेरस के दिन व्यापार अपने बहीखाते नए बनाते हैं।
- अगले दिन नरक चौदस के दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान करना अच्छा माना जाता है।
- अमावस्या के दिन लक्ष्मीजी की पूजा की जाती है।
- खील-बताशे का प्रसाद चढ़ाया जाता है।
- नए कपड़े पहने जाते हैं। फुलझड़ी, पटाखे छोड़े जाते हैं।
- असंख्य दीपों की रंग-बिरंगी रोशनियां मन को मोह लेती हैं।
- दुकानों, बाजारों और घरों की सजावट दर्शनीय रहती है।
- अगला दिन परस्पर भेंट का दिन होता है।
- एक-दूसरे के गले लगकर दीपावली की शुभकामनाएं दी जाती हैं।
- गृहिणियां मेहमानों का स्वागत करती हैं।
- लोग छोटे-बड़े, अमीर-गरीब का भेद भूलकर आपस में मिल-जुलकर यह त्योहार मनाते हैं।
- दीपावली का त्योहार सभी के जीवन को खुशी प्रदान करता है।
- नया जीवन जीने का उत्साह प्रदान करता है।
- कुछ लोग इस दिन जुआ खेलते हैं, जो घर व समाज के लिए बड़ी बुरी बात है।

- हमें इस बुराई से बचना चाहिए।
- पटाखे सावधानीपूर्वक छोड़ने चाहिए।
- इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि हमारे किसी भी कार्य एवं व्यवहार से किसी को भी दुख न पहुंचे, तभी दीपावली का त्योहार मनाना सार्थक होगा।

गतिविधि- दशहरा का चित्र बनाओ अथवा चिपकाओ।

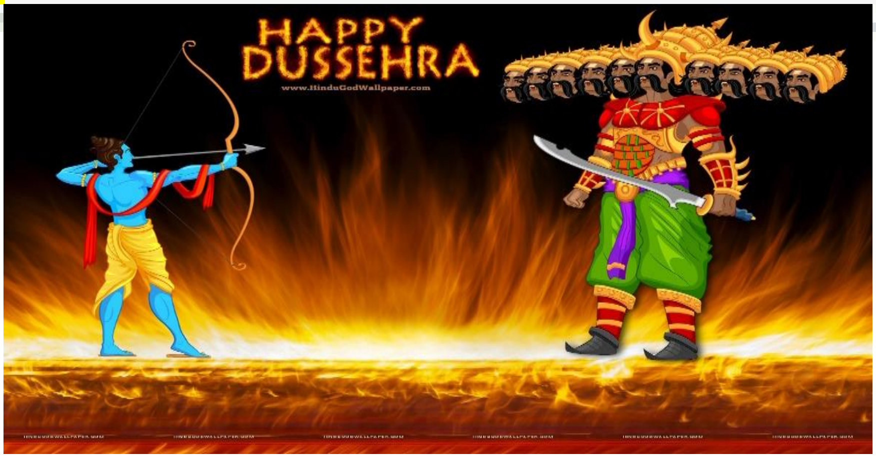

कविता- 14
बाघ आया उस रात
लेखक : नागार्जुन

पाठ का सारः यह कविता बाघ के बारे में दो बच्चों की अभिव्यक्ति है। एक बच्चा अपने बाबा से कहता है-बाघ इधर से निकला था और उधर चला गया था। वह रात के समय आया था। हो सकता है वह फिर आ जाए। अतः आप रात के समय बाहर मत निकलना । बच्चा आगे बताता है-बाघ झरने के पास रहता है। मैं जब दिन के समय वहाँ गया था तो उसे देखा था। और उसे ही नहीं, उसके दो बच्चे और बाघिन को भी देखा था। बाघिन पूरा दिन पहरा देती रहती है। बाघ या तो सोता है या अपने बच्चों के साथ खेलता है। इस पर दूसरा बच्चा, छोटू, कहता है-बाघ कोई काम नहीं करता है। वह न तो ऑफिस जाता है न कॉलेज। वह स्कूल में भी नहीं जाता है। पाँच साल के बेटू ने एक बार फिर अपने बाबा को मना किया रात में बाहर होकर बाथरूम जाने के लिए।

एक बच्चा दूसरे बच्चा को आँखें फैलाकर बता रही है कि बाघ इधर से निकला था और उधर चला गया था। उसने अपने बाबा से कहा-बाघ उस रात को आया था। अतः आप बाहर नहीं निकलना। वह किसी भी समय कभी भी आ सकता है। वह बाघ झरने के पास रहता है। जब मैं दिन के समय वहाँ गया था तो बाघ को उधर देखा था। उसके दो बच्चे हैं। बाघिन पूरा पहरा देती है। बाघ या तो सोता है या बच्चों के साथ खेलता है।

बाघ के बारे में दूसरा बालक, छोटू, कहता है-वह कोई काम नहीं करता। न किसी ऑफिस में जाता है न । किसी कॉलेज में। वह तो स्कूल में भी नहीं जाता। पाँच साल का बेटू फिर हमें सावधान करते हुए कहता है-आप रात को बाहर होकर बाथरूम मत जाना क्योंकि हो सकता है कि बाघ आ जाए।

कठिन शब्द लिखिए

- झरने
- दफ्तर
- कलिज
- आगाह
- वक्त
- पहरा
- कॉलेज
- आगाह
- खेलता
- स्कूल
- दफ्तर

शब्दार्थ लिखिए

- आँखे फैलाकर- रोचक या रुचिपूर्ण ढ़ंग से बाते करना
- झरना- पहाड़ी इलाको में ऊपर से गिरता पानी
- दफ्तर- ऑफ़िस, कार्यालय
- आगाह- चेतावनी

वैकल्पिक प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

१: बाघ किस समय बस्ती मे आया था?

उत्तरः(अ)सुबह को (ख)शाम को

(ग)दोपहर को **(घ) रात को**

२: बाघ के स्कूल मे काम न करने की बात कौन कहता है?

उत्तरः (अ)छोटू (ख)दूसरा बालक

(ग)पहला बालक (घ) बाबा

३: बाबा रात को बाहर निकलकर कहाँ जाते थे?

उत्तरः (अ)बाजार **(ख)बाथरुम**

(ग)कार्यालिय (घ) इनमे से कोई नही

निन्मलिखित प्रश्नो के अति लघु उत्तर लिखिए।

1- " वो इधर से निकला उधर चला गया।" यह किसने कहा?

उ- यह वाक्य बेटू ने कहा।

2- दूसरे बालक के अनुसार बालक कहाँ कहाँ काम नहीं कर सकता था?

उ- दूसरे बालक के अनुसार बालक किसी दफ्तर या कलिज में काम नहीं करता।

3- फिर से आगाह किसने किया?

उ- फिर से आगाह बेटू ने किया।

निन्मलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

1- पहला बालक अपने बाबा को कब,कहाँ जाने से मना कर रहा था और क्यों?

उ- पहला बालक अपने बाबा को रात में बाहर जाने से मना कर रहा था क्योंकि बाघ नज़ाने कब फिर से वहाँ आ जाए।

2- जहाँ बाघ रहता है उस विषय में पहले बालक ने बाबा को से क्या कहा?

उ- पहले बालक ने बाबा को बताया कि एक रोज अपन उधर गए थे,झरने के पास वही तो बाघ अपने दो बच्चों के साथ और बाघिन के साथ रहता है। बाघ या तो सोता है या बच्चों के साथ खेलता है।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१:बाघ की कहानी सुनाते समय बालक ने डर से आँखे मूँद ली थी। (गलत)

२:बालक को विश्वास था कि बाघ फिर से बस्ती मे नही आ सकता। (गलत)

३:बाघिन के तीन बच्चे थे। (गलत)

४:कविता मे वर्णित पहला बालक पाँच वर्ष का है। (सही)

व्याकरण विभाग : विलोम शब्द

एक़-दूसरे के विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाले **शब्द विलोम** कहलाते है।

विस्तार में : जो **शब्द** किसी दूसरे **शब्द** का उल्टा अर्थ बताते हैं, उन्हें **विलोम शब्द** या विपरीतार्थक **शब्द कहते** है।

जैसे- अपेक्षा- नगद

आय- व्यय

आजादी-गुलाम

नवीन- प्राचीन

शब्द एक दूसरे के उलटे अर्थ वाले **शब्द** है। अतः इन्हें '**विलोम शब्द**' **कहते** हैं

- रात - दिन,
- सुख - दुख,
- अपना-पराया,
- राग-द्वेष,
- बन्धन-मुक्ति
- , धनी-निर्धन,
- खण्ड - अखण्ड,
- सज्जन- दुर्जन
- , रोना-हँसना,
- काला - सफेद/गोरा,
- आदि - अन्त,
- गोचर - अगोचर,
- जन्म-मृत्यु,
- भाई - बहन,
- माता-पिता,
- संतृप्त - असंतृप्त,
- संतोष – असंतोष
- , सहयोग - असहयोग,
- आचार - अनाचार,
- योगी-भोगी,
- स्वस्थ - रोगी,
- योग्य - अयोग्य,
- स्वीकारना - अस्वीकारना/नकारना
- वृद्ध - बाल/वृद्धा,
- बचपन - बुढ़ापा,
- जीवित - अजीवित,
- शब्द - निशब्द,
- साकार - निराकार,
- साहस - दुःसाहस,
- राज - रानी,
- मान - अपमान,
- रूठना - मनाना,
- प्रेम - घृणा,
- लेना - देना,
- सोना - जागना,
- खोना - पाना,
- लाभ - हानि,
- सफलता – असफलता
- , प्रसन्न- अप्रसन्न,
- मरना - जीना,
- तेरा - मेरा,
- बेटा - बेटी,
- पति - पत्नी,
- छका - भूखा,
- मोटा - पतला,
- भारी - हल्का,
- भरा - खाली,
- ठण्डा - गरम,
- सम्भव - असम्भव,
- गीला - सूखा,
- खट्टा- मीठा/कड़ू/तीखा,
- सान्द्र - तनु,

- शान्त - अशान्त,
- हम - तुम,
- आना - जाना,
- खोना - पाना,
- लड़का - लड़की,
- आद्र – निरादर
- , दोष - निर्दोष,
- दूर - पास,
- संलयन - विखण्डन,
- जोड़ना - तोड़ना/घटाना,
- सुगम - दुर्गम,
- वृद्धि - विनाश
- सुकर्म - कुकर्म/दुष्कर्म
- पुत्र - पुत्री,
- सुपुत्र - कुपुत्र,
- गीला - सूखा,
- सत्य - असत्य,
- सच - झूठ,
- आदि - अनादि
- काल - अकाल
- अन्त - अनन्त
- अथ - इति
- लम्बा - नाटा/छोटा
- छोटा - लम्बा/बड़ा

लेखन विभाग :चित्र वर्णन

1.

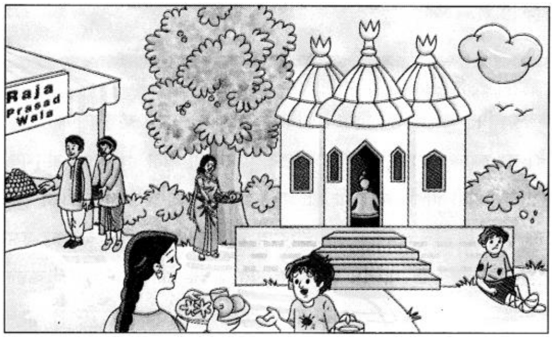

- प्रस्तुत चित्र मंदिर का है।
- मंदिर एक ऐसा स्थान है, जहाँ व्यक्ति श्रद्धाभाव से जाता है और अपने इष्टदेव की पूजा करके मानसिक शांति पाता है।
- अतः प्रातः काल सभी लोग मंदिर जाते हैं।
- इस चित्र में एक महिला हाथ में पूजा की थाली लिए मंदिर जा रही है।
- हिंदू धर्म में वृक्ष की पूजा का विधान है इसलिए प्रत्येक मंदिर के बाहर पीपल या केला का पेड़ एवं तुलसी का पौधा होता है।
- इस चित्र में भी एक वृक्ष है जिसके सामने खड़े होकर एक महिला पूजा कर रही है।
- एक बच्चा पूजा के लिए जाती हुई महिला से भिक्षा माँग रहा है उसके एक हाथ में पात्र है और उसने दूसरा हाथ भिक्षा के लिए फैला रखा है।
- सीढ़ियों के पास एक बच्चा बैठा है, जो कि अपाहिज है। वह मंदिर में आने वाले भक्तों से दया की भीख चाहता है।

2.

यह चित्र रेलवे प्लेटफार्म का है।

- जिसमें एक गाड़ी खड़ी है।
- गाड़ी के अंदर यात्री बैठे हुए हैं।
- दो कुली सिर पर सामान रखकर हाथ में अटैची पकड़े चल रहे हैं।
- जिस व्यक्ति का सामान है वह उनके साथ चल रहा है।
- एक बच्चा हाथ में अखबार लिए बेचने के लिए घूम रहा है।
- दूसरी तरफ एक बच्चा अपनी बूट-पॉलिश की दुकान लगाए बैठा है।
- एक व्यक्ति हाथ में समाचार-पत्र लिए पढ़ रहा है।
- बच्चा उनके जूते की पॉलिश कर रहा है।
- किनारे पर एक कूड़ेदान रखा हुआ है, लेकिन कूड़ा चारों ओर फैला हुआ है।
- सरकार की ओर से साफ़-सफ़ाई की ओर ध्यान दिया जाता है।
- मगर जब तक प्रत्येक नागरिक अपना कर्तव्य नही निभाएँगे तब तक सभी प्रयत्न विफल होते रहेंगे।

गतिविधिः बाघ का चित्र बनाओ अथवा चिपकाओ।

–

पाठ- 15
बिशन की दिलेरी
लेखक : प्रतिभा नाथ

पाठ का सारः सुबह सुबह दस वर्ष का बिशन घर से बाहर निकल आया। वह रोज इसी समय, इसी रास्ते से कर्नल दत्ता के फार्म हाउस पर उनकी पत्नी से पढ़ने जाता है। अचानक उसे गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी। थोड़ी ही देर बार दो-तीन गोलियाँ एकसाथ चलीं। गोलियों की आवाज़ से पूरी घाटी गूंज गई। बिशन डर गया और पेड़ों की आड़ में छिप गया। अभी वह सोच ही रहा था कि गोली किसने और क्यों चलाई होगी कि तभी एक और गोली की आवाज़ आई। अचानक बिशन को गोली चलने का कारण समझ में आ गया। दरअसल शिकारी गेहूं के खेतों में दाना चुगते तीतरों को मारने के लिए उन पर गोली चलाते हैं।

बिशन दुखी हो गया। वह समझ गया कि शिकारी ही तीतरों पर गोलियाँ चला रहे हैं। फिर तो वह पेड़ों के बीच से निकलकर खेतों के किनारे-किनारे चलने लगा। चलते-चलते उसने शिकारियों को सबक सिखाने का निर्णय ले लिया। तभी उसकी नज़र एक घायल तीतर पर पड़ गई। उसने स्वेटर उतारकर उस पर (तीतर पर) डाल दिया और जब वह स्वेटर में फँस गया तो उसे पकड़ लिया। उसने उसे सीने से चिपका लिया और तेजी से पहाड़ी की ओर दौड़ पड़ा ताकि किसी शिकारी की नज़र उस पर न पड़े। लेकिन जिस बात का उसे डर था वही हुआ। वह कुछ ही दूर गया होगा कि पीछे से किसी की भारी आवाज़ सुनाई दी, "लड़के, रुक जा, नहीं तो मैं गोली मार दूंगा।" बिशन का दिल तेजी से धड़कने लगा। डर के बावजूद उसने आगे बढ़ना जारी रखा। अचानक शिकारी उसके काफी नजदीक आ गया। वह गुस्से में चिल्ला रहा था, "मैं तुझे देख लूंगा, तू मेरा शिकार चुराकर नहीं ले जा सकता।" बिशन के लिए आगे निकल भागने का रास्ता नहीं था। अतः उसने खेतों के छोटे रास्ते, जो काँटेदार झाड़ियों से भरे थे, से जाना निश्चित किया। बहुत संभलकर चलने के बावजूद उसके हाथ-पैर पर काँटों की बहुत-सी खरोंचें उभर आईं। लेकिन किसी तरह वह कर्नल दत्ता के फार्म हाउस के अंदर पहुँच ही गया। तीतर को वह सीने से लगाए रहा।

फार्म हाउस में खामोशी थी। एकाएक कर्नल दत्ता का अल्सेशियन कुत्ता भौंकने लगा। बिशन समझ गया कि शिकारी इधर ही आ रहे हैं। उसने झट तीतर को सुरक्षित स्थान पर छिपा दिया और बाहर निकल गया और शिकारियों की नजर से बचने के लिए खपरैल की ढलावदार छत पर चिमनी के पीछे छिपकर बैठ गया। यहाँ उसे कोई नहीं देख सकता था लेकिन वह सब कुछ देख सकता था। वह देख रहा था कि कर्नल साहब का अल्सेशियन कुत्ता कैसे इधर ही चले आ । रहे शिकारियों को देखकर भौंके जा रहा था। आखिरकार शिकारी कर्नल साहब के नजदीक पहुँच ही गए। उन्होंने कर्नल साहब से कहा कि अभी-अभी एक लड़का हमारे शिकार तीतर को लेकर आपके यहाँ छिपा है, हम उसे ही ढूँढ रहे हैं। कर्नल साहब आपे से बाहर हो गए। उन्होंने शिकारियों को खूब डाँटा और वहाँ से भगा दिया। बिशन चिमनी के पीछे से देख और सुन रहा था। शिकारियों के जाते ही वह घायल तीतर को लेकर घर की मालकिन (कर्नल दत्ता की पत्नी) के पास पहुँच गया। कर्नल

साहब भी वहाँ पहुँच गए। फिर दोनों ने मिलकर तीतर का उपचार किया। कर्नल साहब की पत्नी ने उसे दलिया खिलाया। फिर बिशन उसे लेकर अपने घर चला गया।

कठिन शब्द लिखिए

- फर्म हाउस
- छिड़काव
- कीटनाशक
- तड़के
- पगडंडी
- सहमकर
- सीढ़ीनुमा
- फ़सल
- कँटीले
- खरोंचो
- बरामदा
- ढ़लवाँ

शब्दार्थ लिखिए

- तड़के-बहुत सुबह
- सहमकर-डरकर
- जख्मी-घायल
- तय किया-निश्चित किया
- कामयाब रहा-सफल रहा
- आहट-किसी के आने की आवाज
- खामोशी-चुप्पी
- अजनबी-अनजान व्यक्ति
- रौबदार-प्रभावशाली
- पल्लू-आँचल
- कीटनाशक- कीड़े मारने की दवा
- ढ़ँलवा- ढ़लानवाला
- सीढ़ीनुमा- सीढ़ी जैसे खेत
- कँटीले- काँटेवाली
- बरामदा- घर के बाहर का हिस्सा

वैकल्पिक प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

१:कौन किसे सबक सिखाना चाहता था?

उत्तरः (क)शिकारी बिशन को (ख)**बिशन शिकारियो को**

(ग) कर्नल शिकारियो को (घ)बिशन कीटनाशक छिडकने वालो को

२:बिशन ने तीतर को पकडने के लिए अपने किस वस्त्र का उपयोग किया?

उत्तरः **(क) स्वेटर का** (ख) शर्ट का

(ग) टोपी का (घ) तौलिये का

३:तीतर को छिपाने के लिए बिशन को टूटी टोकरी कहाँ मिली?

उत्तरः **(क) फार्म हाउस के बाहर** (ख) झाडी मे

(ग) छत पर (घ)शेड के नोचे रखे कबाड़ मे

४:शिकारियो की जान-पहचान किससे थी?

उत्तरः (क)गुलाब चंद्र से **(ख)माधो सिंह से**

(ग) कर्नल से (घ)कर्नल की पत्नी से

५ःबिशन कर्नल साहब और उनकी पत्नी को क्या कहकर संबोधित करता था?

उत्तरः **(क)बाबूजी और बहूजी** (ख)साहब और साहिबा

(ग)मालिक और मालकिन (घ)गुरुजी और माताजी

निम्नलिखित प्रश्नो के अति लघु उत्तर लिखिए।

1- गेहुँ के खेतों में तीतरो का जमावडा कब लगता है?

उ- जब फ़सल पक जाती है,तब तीतरो का जमावडा लगता है।

2- तीतर कहाँ फँसा छटपटा रहा था?

उ-तीतर गेहुँ की बालियों के बीच फँसा छटपटा रहा था।

3- तीतर को बचाकर भागने के क्रम में कमीज़ फटने पर भी बिशन को किस बात कासंतोष था?

उ- तीतर को बचाकर भागने के क्रम में कमीज फटने पर भी बिशन को इस बात का संतोष था कि उसने तीतर को बचा लिया।

4- शिकारियों को कर्नल साहब से क्या उम्मीद न थी?

उ- शिकारियों को उम्मीद न थी कि तीतरों के शिकार पर कर्नल साहब उन्हें डाँट देंगे।

5- कर्नल साहब को घायल तीतर के उड़ने पर संदेह क्यों था?

उ- कर्नल साहब को घायल तीतर के उड़ने पर संदेह था क्योंकि वह जानते थे कि टूटे पाँव से तीतर उड़ नहीं सकेगा।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

1- बिशन रोज़ सवेरे कहाँ और किस उददेश्य से जाता था?

उ- बिशन रोज़ कर्नल साहब के फारम हाउस जाता था। उसकी पत्नी उसकी पढ़ाई में मदद करती थी।

2- बिशन को छिपने के लिए चिमनी के पीछे की जगह सुरक्षित क्यों लगी?

उ- चिमनी के पीछे छिपने से बिशन सब को देख सकता था। परन्तु उसे कोई नहीं देख सकता था इसलिए वह जगह सुरक्षित लगी।

3- कर्नल साहब और उनकी पत्नी ने तीतर को किस प्रकार मदद पहुँचाई?

उ- कर्नल साहब ने तीतर की मरहम पटटी करके और उनकी पत्नी ने दलिया खीला करतीतर की मदद की।

निम्नलिखित प्रश्नो के दीर्घ उत्तर लिखिए।

1- बिशन को पिछले वर्ष की कौन-सी घटना याद आई?

उ- बिशन को याद आई पिछले वर्ष किस तरह शिकारियों ने ढ़ेरो तीतर मारे थे और ज्यादा घायल खेतों में छोड़ गए थे।

2- बिशनने शिकारियों के विषय में क्या सोचा?

उ- बिशनने शिकारियों के विषय में सोचा कि बहुत दुःख पहुँचाने वाला काम करते हैं। इन्हें सबक सिखाना चाहिए।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१:बिशन ने पहली बार मे ही तीतर को पकड लिया था। (गलत)
२:गोली मार देने की धमकी से डरकर बिशन भागने लगा था। (गलत)
३:बिशन घायल तीतर को पालना चाहता था। (सही)
४:कर्नल साहब ने तीतर के पंजे को फैलाकर टेप लगा दिया था। (गलत)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१:गोलियो की आवाज से पूरी **घाटी** गूँज गई थी।
२:बिशन ने तीतर को **सीन** से चिपका लिया था।
३:कर्नल दत्ता ने गुलाब चंद से **दवाई छिडकने वाली मशीन** लाने को कहा।
४:कर्नल दत्ता ने तीतर के **पैरो** का जख्म साफ किया।

व्याकरण विभागः पर्यायवाची शब्द

जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है, उन्हें समानार्थक या **पर्यायवाची शब्द** कहते है।

पर्याय' का अर्थ है- 'समान' तथा 'वाची' का अर्थ है- 'बोले जाने वाले' अर्थात जिन शब्दों का अर्थ एक जैसा होता है, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं।

समान अर्थवाले शब्दों को 'पर्यायवाची शब्द' या समानार्थक भी कहते है।

जैसे- सूर्य, दिनकर, दिवाकर, रवि, भास्कर, भानु, दिनेश-

इन सभी शब्दों का अर्थ है 'सूरज' ।

इस प्रकार ये सभी शब्द 'सूरज' के पर्यायवाची शब्द कहलायेंगे।

क्रमांक	शब्द	पर्यायवाची शब्द
1	अग्नि	आग, ज्वाला, दहन, वैश्वानर, वायुसखा, अनल,

		पावक, वह्नि
2	असुर	निशिचर, रजनीचर, दैत्य, तमचर, राक्षस, निशाचर, दानव, रात्रिचर।
3	अलंकार	आभूषण, भूषण, विभूषण, गहना, जेवर।
4	अहंकार	गर्व, अभिमान, घमंड, मान।
5	अंधकार	तम, तिमिर, तमिस्र, अँधेरा, तमस, अंधियारा।
6	अंग	अंश, अवयव, हिस्सा, भाग।
7	अनादर	अपमान, अवज्ञा, अवहेलना, तिरस्कार।
8	अंकुश	नियंत्रण, पाबंदी, रोक, दबाव।
9	अंतर	भिन्नता, असमानता, भेद, फर्क।
10	अंतरिक्ष	खगोल, नभमंडल, गगनमंडल, आकाशमंडल।
11	भाई-	तात, अनुज, अग्रज, भ्राता, भ्रातृ।
12	अंबर	आकाश, आसमान, गगन, फलक, नभ
13	अटल	अविचल, अडिग, स्थिर, अचल।
14	अनमोल	अमूल्य, बहुमूल्य, बेशकीमती।
15	अनाथ	तीम, लावारिस, बेसहारा, अनाश्रित।
16	अनुज	छोटा भाई, अनुभ्राता, कनिष्ठ।
17	अभद्र	असभ्य, अविनीत, अकुलीन, अशिष्ट।

18	आँख	लोचन, अक्षि, नैन, नयन, नेत्र, चक्षु, दृष्टि
19	आईना	दर्पण, आरसी, शीशा।
20	आक्रोश	क्रोध, रोष, कोप, खीझ।
21	आचार्य	शिक्षक, अध्यापक, प्राध्यापक, गुरु।
22	आरंभ	श्रीगणेश, शुभारंभ, प्रारंभ, शुरुआत
23	इंदु	चाँद, चंद्रमा, चंदा, शशि, मयंक, महताब।
24	ईर्ष्या	विद्वेष, जलन, कुढ़न, ढाह।
25	उपवन	बाग़, बगीचा, उद्यान, वाटिका, गुलशन।
26	उषा	सुबह, भोर, ब्रह्ममुहूर्त।
27	ऋषि	साधु, महात्मा, मुनि, योगी, तपस्वी।
28	एहसान	कृपा, अनुग्रह, उपकार।
29	ओंठ	ओष्ठ, अधर, लब, होठ।
30	ऐश्वर्य	समृद्धि, विभूति।
31	औरत	स्त्री, जोरू, महिला, नारी, वनिता, घरवाली।
32	औषधालय	चिकित्सालय, दवाखाना, अस्पताल।
33	कमल	अरविन्द, पुष्कर, पंकज, नीरज, सरोज, जलज, जलजात, पुण्डरीक।
34	कपड़ा	वस्त्र, चीर, वसन, पट, अम्बर, परिधान।

35	किसान	कृषक, भूमिपुत्र, हलधर, खेतिहर, अन्नदाता।
36	कान	कर्ण, श्रुति, श्रुतिपटल, श्रवण।
37	कमजोर	निर्बल, बलहीन, दुर्बल, मरियल, शक्तिहीन।
38	कुसुम	पुष्प, फूल, प्रसून, पुहुप।
39	खग	पक्षी, द्विज, विहग, नभचर, अण्डज, पखेरू।
40	गृह	घर, सदन, भवन, धाम, निकेतन, निवास, आवास, मंदिर।
41	गिरि	पहाड़, मेरु, शैल, महीधर, धराधर, भूधर।
42	गोद	अंक, क्रोड़, गोदी।
43	चावल	तंदुल, धान, भात।
44	चूहा	मूसा, मूषक, मुसटा, उंदुर।
45	जल	मेघपुष्प, अमृत, वारि, नीर, पानी, जीवन, पेय
46	जगत	-संसार, विश्व, जग, भव, दुनिया, लोक, भुवन।
47	जमीन	धरती, भू, भूमि, पृथ्वी, धरा, वसुंधरा।
48	जलाशय	तालाब, ताल, पोखर, सरोवर।
49	तरुवर	वृक्ष, पेड़, द्रुम, तरु, पादप।
50	मछली	मीन, मत्स्य, झख, जलजीवन, शफरी

लेखन विभाग : अनौपचारिक पत्र लेखन

आपके मामा जी ने नया घर लिया है, बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

36. राठौड़ नगर

साबरमती

अहमदाबाद

दिनांक : 15 अक्टूबर, 2021

मैं यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ और ईश्वर से कामना करती हूँ कि आप भी सपरिवार कुशलतापूर्वक होंगे। कल ही माँ ने मुझे यह शुभ समाचार दिया कि आपने घर लिया है। इस समाचार को सुनकर मुझे अत्यंत प्रसन्नत हुई। यह सुनकर और अधिक प्रसन्नता हुई कि आपका घर शहर के प्रतिष्ठित क्षेत्र में है और आधुनिक सुख-सुविधाओं से सुसज्जित है। यह सब आपके परिश्रम व इश्वर की कृपा से संभव हुआ है। मैं अंतर्मन से आपको बधाई देती हूँ। मैं माँ और पिता जी के साथ घर देखने शीघ्र आऊँगी।

मामी जी को प्रणाम तय नीतू को चार दीजिएगा।

आपकी भांजी

आपका नाम

2

गतिविधि- बिशन और तीतर का चित्र बनाओ अथवा चिपकाओ।

पाठ-16
पानी रे पानी
लेखक :अनुपम मिश्रा

पाठ का सारः पानी हम हर काम में इस्तेमाल करते हैं लेकिन शायद ही कभी इसके बारे में सोचते हैं, जैसे— यह कहाँ से आता है? कहाँ चला जाता है? भूगोल की किताब में जलचक्र के बारे में बताया जाता है। समुद्र से उठी भाष बादल बनकर पानी में बदलती है और फिर वर्षा होती है। वर्षा का जल समुद्र में वापस मिलकर जलचक्र की प्रक्रिया पूरी करता है।

हमारे घरों में, स्कूल में, दफ्तरों में, कारखानों आदि में नलों के माध्यम से पानी आता है। और मुसीबत यह है कि इन नलों में अब पूरे समय पानी नहीं आता। कभी देर रात में आता है तो कभी सुबह-सुबह। पानी की आवश्यकता तो सभी को है। अतः लोग नींद की परवाह किए बिना बाल्टियाँ, बर्तन, घड़े आदि लेकर नलों पर इकट्ठे हो जाते हैं। कभी-कभी पानी को लेकर लोगों में आपस में तकरार भी हो जाती है।

इन्हीं झगड़ों से बचने के लिए कई घरों में लोग नलों के पाइप में मोटर लगवा लेते हैं। इससे कई घरों का पानी, खींचकर एक ही घर में आ जाता है। और आसपास के घरों का हक छिन जाता है। पानी की दिक्कत से बचने के लिए अब ज्यादातर घर यही करने लगे हैं। परिणामस्वरूप पानी की कमी बढ़ गई है और सबको इस समस्या का सामना करना पड़ रहा है। देश के बड़े-बड़े शहरों में भी लोग पानी की कमी के कारण कष्ट का सामना कर रहे हैं। देश के कई हिस्सों में तो गर्मी में अकाल जैसी स्थिति बन जाती है। और बरसात में कई इलाके बाढ़ में डूब जाते हैं। यह बाढ़ न गाँवों को छोड़ती है न मुंबई जैसे बड़े शहरों को। कुछ दिनों के लिए सब कुछ थम-सा जाता है।

इस प्रकार अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इन्हें ठीक से समझना जरूरी है। तभी हम इन समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं।
हम गुल्लक में पैसा जमा करते हैं ताकि इन्हें जरूरत पड़ने पर उपयोग में ला सकें। ठीक उसी प्रकार हम पानी को धरती की गुल्लक में जमा कर सकते हैं। हमारे गाँव में, शहर में जो छोटे-बड़े तालाब, झील आदि हैं वे धरती की गुल्लक में पानी भरने का काम करते हैं। इनमें जमा पानी जमीन के नीचे छिपे जल के भंडार में धीरे-धीरे रिसकर, छनकर जा मिलता है। इससे हमारा भूजल भंडार समृद्ध होता जाता है। पानी का यह खजाना हमें दिखता नहीं, लेकिन इसी खजाने से हम बरसात का मौसम बीत जाने के बाद पूरे साल भर तक अपने उपयोग के लिए घरों में, खेतों में, पाठशाला में पानी निकाल सकते हैं।

लेकिन आज परिस्थिति बदल गई है। जमीन के लालच में हम अपने तालाबों को कचरे से पाटकर, भरकर समतल बना देते हैं ताकि उस पर मकान, बाज़ार, स्टेडियम आदि खडे हो सकें। इसी लालच के कारण हमें पानी

की दिक्कत का सामना करना पड रहा है। गर्मी के दिनों में सूखे नल मिलते हैं और बरसात में डूबी बस्तियाँ। इसीलिए यदि हमें इन समस्याओं से बचना है तो अपने आसपास के जलस्रोतों की, तालाबों की और नदियों आदि की रखवाली अच्छे ढंग से करनी पडेगी। हमें जरूरत है जलचक्र ठीक से समझने की, बरसात में उसे थामने की, अपने भूजल भंडार को सुरक्षित रखने की और अपनी गुल्लक भरते रहने की। तभी हम पानी की कमी से उबर पाएंगे।

कठिन शब्द लिखिए

- भूगोल
- जल-चक्र
- दफ्तरो
- कारखानों
- बेवक्त
- तू-तू-मैं-मैं
- झगडे-टंटो
- भयानक
- भंडार
- समृदध
- जलस्त्रोतों

शब्दार्थ लिखिए

- जल-चक्र- पानी बरसने का क्रम
- समस्याओं- कढ़िनाई
- बेवक्त- असमय
- भंडार- कोष, खज़ाना
- तू-तू-मैं-मैं- झगडा करना
- हालात- परिस्थिति
- जल-स्त्रोतो- पानी का जरिया या पानी के साधन

वैकल्पिक प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

१:जल-चक्र का संबंध किस विषय से है?

उत्तरः (क)हिन्दी (ख)अंग्रेजी

(ग)गणित **(घ)भूगोल**

२:पानी से जूडे झगडो के निदान के लिए कुछ लोग अपने नलो के पाइप मे क्या लगवाते है?

उत्तरः (क)पंप **(ख) मोटर**

(ग)जनरेटर (घ)इंजन

३:असली गुल्लक और धरती रूपी गुल्लक मे क्या समानता है?

उत्तरः **(क)दोनो मिट्टी के बने ह** (ख) दोनो मे पैसे रखते है

(ग) दोनो मे छिद्र है (घ)दोनो गिरकर फूट सकते है

४:पानी के चक्कर मे न फँसने के लिए किसका समुचित उपयोग किया जाना चाहिए?

उत्तरः (क)आहार -चक्र का **(ख)जल-चक्र का**

(ग)वायु -चक्र का (घ)इन सबका

निम्नलिखित प्रश्नो के अति लघु उत्तर लिखिए।

1- नलों से सूँ-सूँ की आवाज़ कब आती है?

उ- जब पूरे समय नलो में पानी नहीं आता तब नल खोलने पर सूँ-सूँ की आवाज़ आती है।

2- जल-संकट से निपटने के लिए हमें किन दो चीज़ों को ठीक से समझने और सँभालने की आवश्यकता है?

उ-जल-संकट से निपटने के लिए हमें जल-चक्र को ठीक से समझना होगा। नदी,तालाबो की रखवाली करनी होगी।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

1- नलों के पाइप में मोटर लगाकर आजकल पड़ोसियों का हक किस प्रकार छीना जा रहा है? आगे चलकर इससे कौन-सी भीषण समस्या उत्पन्न होती है?

उ- नलो के पाइप में मोटर लगाकर पानी खींचने से पानी एक और खिच जाता है फिर पानी की बड़ी समस्या उत्पन्न होती है और पैसो से पानी बीकना शुरु हो जाता है।

2- हमें प्रकृति से पानी का खजाना कैसे प्राप्त होता है?

उ- यदि हम वनों की रक्षा कर, शहरों में वृक्षों का ज्यादा रोपण करे, प्रदूषण फैलानेवाले पदार्थो का उपयोग कम करे, नदियों के किनारे भवन, फैक्ट्रीनिर्माण न करवाए तो हम प्रकृति से कुँए, तालाबों, नदियों से वर्षा से पर्याप्त जल ले पाएँगें।

निम्नलिखित प्रश्नो के दीर्घ उत्तर लिखिए।

1- पुस्तकों में जल-चक्र को किस प्रकार दर्शाया जाता है?

उ- पुस्तकों में जल-चक्र को बहुत ही सुंदर चित्र द्वारा दर्शाया जाता है जिसमें सूरज, समुद्र, भाप, बादल,धरती पर पडती बरसात की बूँदे फिर नदियों में पानी का स्तर,बहाव और उसी सुंदर बहती नदी किनारे हमारा गाँव और शहर हरे-भरे खेत। इस तरह सुदर जल-चक्र दर्शाया जाता है।

2- नलों में पानी को लेकर कौन-कौन सी समस्याएँ उत्पन्न होती है? उनका हम पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उ- जब पानी की कमी पड़ती है तब पूरे समय नलों में पानी नहीं आता है। पानी आता भी है तो बेवक्त आता है। कभी आधी रात को, कभी सुबह सवेरे। पानी को लेकर कभी-कभी आपस में लडाई झगड़े भी हो जाता है।कई लोग पाइप में मोटर लगाकर पानी खींच लेते है। जिससे पानी की परेशानी-बढ़ जाती है। मजबूरी में कई बार लोग पानी खरीदकर कर लाते है और उपयोग में लेते है।

3- अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। कसे?

उ- बिगडते हुए मौसम चक्र व कम वर्षा के कारण अकाल जैसी स्थिति पैदा -हो जाती है और जब वर्षा कम होने लगती है तब साफ़ पानी भी बह जाता है। उनका संग्रह हो पाना मुश्किल हो जाता है। कही-कही इतनी वर्षा हो जाती है कि बाढ़ में अच्छे-अच्छे शहर डुब जाते है। इसतरह पानी का कम होना या ज्यादा होना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१:गर्मियो मे नलो मे पानी आने का कोई निश्चित समय नही होता। (सही)

२:आज शहरी लोग अन्य चीजो के साथ-साथ पानी भी खरीदते है। (सही)

३:बाढ जैसी समस्या मुंबई को नही सताती। (गलत)

४:तालाबो और झीलो का पानी भूमी के नीचे छिप जल मे नही मिलता । (गलत)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१:सम्रुद मे उठी **भाप** बादल बनकर पानी मे बदल जाती है।

२:पानी की पाइप मे लगा मोटर कई घरो का पानी खींच लेता है।

३:बाढ के दौरान कुछ दिनो के लिए सबकुछ थम जाता है।

४:वषा रुपयो से कई गुना कीमती है।

व्याकरण विभागःशब्द समुह के लिए एक शब्द

अच्छी रचना के लिए आवश्यक है कि कम से कम शब्दों में विचार प्रकट किए जाएँ। भाषा में यह सुविधा भी होनी चाहिए कि वक्ता या लेखक कम से कम शब्दों में अर्थात् संक्षेप में बोलकर या लिखकर विचार अभिव्यक्त कर सके। कम से कम शब्दों में अधिकाधिक अर्थ को प्रकट करने के लिए 'वाक्यांश या शब्द–समूह के लिए एक शब्द' का विस्तृत ज्ञान होना आवश्यक है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से वाक्य–रचना में संक्षिप्तता, सुन्दरता तथा गंभीरता आ जाती है

क्रमांक	वाक्यांश या शब्द-समूह	शब्द
1.	जिसका जन्म नहीं होता	अजन्मा
2.	पुस्तकों की समीक्षा करने वाला	समीक्षक , आलोचक
3.	जिसे गिना न जा सके	अगणित
4.	जो कुछ भी नहीं जानता हो	अज्ञ
5.	जो बहुत थोड़ा जानता हो	अल्पज्ञ
6.	जिसकी आशा न की गई हो	अप्रत्याशित
7.	जो इन्द्रियों से परे हो	अगोचर
8.	जो विधान के विपरीत हो	अवैधानिक
9.	जो संविधान के प्रतिकूल हो	असंवैधानिक
10.	जिसे भले -बुरे का ज्ञान न हो	अविवेकी
11.	जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्वितीय
12.	जिसे वाणी व्यक्त न कर सके	अनिर्वचनीय
13.	जैसा पहले कभी न हुआ हो	अभूतपूर्व
14.	जो व्यर्थ का व्यय करता हो	अपव्ययी
15.	बहुत कम खर्च करने वाला	मितव्ययी

16.	सरकारी गजट में छपी सूचना	अधिसूचना
17.	जिसके पास कुछ भी न हो	अकिंचन
18.	दोपहर के बाद का समय	अपराह्न
19.	जिसका निवारण न हो सके	अनिवार्य
20.	देहरी पर रंगों से बनाई गई चित्रकारी	अल्पना
21.	आदि से अन्त तक	आघन्त
22.	जिसका परिहार करना सम्भव न हो	अपरिहार्य
23.	जो ग्रहण करने योग्य न हो	अग्राह्य
24.	जिसे प्राप्त न किया जा सके	अप्राप्य
25.	जिसका उपचार सम्भव न हो	असाध्य
26.	भगवान में विश्वास रखने वाला	आस्तिक
27.	भगवान में विश्वास न रखने वाला	नास्तिक
28.	आशा से अधिक	आशातीत
29.	ऋषि की कही गई बात	आर्ष
30.	पैर से मस्तक तक	आपादमस्तक
31.	अत्यंत लगन एवं परिश्रम वाला	अध्यवसायी
32.	आतंक फैलाने वाला	आंतकवादी
33.	देश के बाहर से कोई वस्तु मंगाना	आयात
34.	जो तुरंत कविता बना सके	आशुकवि
35.	नीले रंग का फूल	इन्दीवर
36.	उत्तर -पूर्व का कोण	ईशान
37.	जिसके हाथ में चक्र हो	चक्रपाणि
38.	जिसके मस्तक पर चन्द्रमा हो	चन्द्रमौलि
39.	जो दूसरों के दोष खोजे	छिद्रान्वेषी
40.	जानने की इच्छा	जिज्ञासा
41.	जानने को इच्छुक	जिज्ञासु
42.	जीवित रहने की इच्छा	जिजीविषा
43.	इन्द्रियों को जीतने वाला	जितेन्द्रिय
44.	जीतने की इच्छा वाला	जिगीषु
45.	जहाँ सिक्के ढाले जाते हैं	टकसाल

46.	जो त्यागने योग्य हो	त्याज्य
47.	जिसे पार करना कठिन हो	दुस्तर
48.	जंगल की आग	दावाग्नि
49.	गोद लिया हुआ पुत्र	दत्तक
50.	बिना पलक झपकाए हुए	निर्निमेष
51.	जिसमें कोई विवाद ही न हो	निर्विवाद
52.	जो निन्दा के योग्य हो	निन्दनीय
53.	मांस रहित भोजन	निरामिष
54.	रात्रि में विचरण करने वाला	निशाचर
55.	किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता	पारंगत
56.	पृथ्वी से सम्बन्धित	पार्थिव
57.	रात्रि का प्रथम प्रहर	प्रदोष
58.	जिसे तुरंत उचित उत्तर सूझ जाए	प्रत्युत्पन्नमति
59.	मोक्ष का इच्छुक	मुमुक्षु
60.	मृत्यु का इच्छुक	मुमूर्षु
61.	युद्ध की इच्छा रखने वाला	युयुत्सु
62.	जो विधि के अनुकूल है	वैध
63.	जो बहुत बोलता हो	वाचाल
64.	शरण पाने का इच्छुक	शरणार्थी
65.	सौ वर्ष का समय	शताब्दी
66.	शिव का उपासक	शैव
67.	देवी का उपासक	शाक्त
68.	समान रूप से ठंडा और गर्म	समशीतोष्ण
69.	जो सदा से चला आ रहा हो	सनातन
70.	समान दृष्टि से देखने वाला	समदर्शी
71.	जो क्षण भर में नष्ट हो जाए	क्षणभंगुर
72.	फूलों का गुच्छा	स्तवक
73.	संगीत जानने वाला	संगीतज्ञ
74.	जिसने मुकदमा दायर किया है	वादी
75.	जिसके विरुद्ध मुकदमा दायर किया है	प्रतिवादी

76.	मधुर बोलने वाला	मधुरभाषी
77.	धरती और आकाश के बीच का स्थान	अंतरिक्ष
78.	हाथी के महावत के हाथ का लोहे का हुक	अंकुश
79.	जो बुलाया न गया हो	अनाहूत
80.	सीमा का अनुचित उल्लंघन	अतिक्रमण
81.	जिस नायिका का पति परदेश चला गया हो	प्रोषित पतिका
82.	जिसका पति परदेश से वापस आ गया हो	आगत पतिका
83.	जिसका पति परदेश जाने वाला हो	प्रवत्स्यत्पतिका
84.	जिसका मन दूसरी ओर हो	अन्यमनस्क
85.	संध्या और रात्रि के बीच की वेला	गोधुलि
86.	माया करने वाला	मायावी
87.	किसी टूटी - फूटी इमारत का अंश	भग्नावशेष
88.	दोपहर से पहले का समय	पूर्वाह्न
89.	कनक जैसी आभा वाला	कनकाय
90.	हृदय को विदीर्ण कर देने वाला	हृदय विदारक
91.	हाथ से कार्य करने का कौशल	हस्तलाघव
92.	अपने आप उत्पन्न होने वाला	स्त्रैण
93.	जो लौटकर आया है	प्रत्यागत
94.	जो कार्य कठिनता से हो सके	दुष्कर
95.	जो देखा न जा सके	अलक्ष्य
96.	बाएँ हाथ से तीर चला सकने वाला	सव्यसाची
97.	वह स्त्री जिसे सूर्य ने भी न देखा हो	असुर्यम्पश्या
98.	यज्ञ में आहुति देने वाला	हौदा
99.	जिसे नापना सम्भव न हो	असाध्य
100.	जिसने किसी दूसरे का स्थान अस्थाई रूप से ग्रहण किया हो	स्थानापन्न

लेखन विभाग :कहानी लेखन : खरगोश और कछुआ

बहुत पुरानी बात है। एक गाँव था। उस गाँव के समीप एक नदी बहती थी। नदी के दूसरी तरफ घना जंगल था। उस जंगल में एक खरगोश रहता था। एक दिन की बात है। नदी में कहीं से एक बड़ा-सा कछुआ आकर रहने लगा। खरगोश और कछुए दोनों में दोस्ती हो गई। एक दिन खरगोश ने कछुए से पूछा- "तुम कितनी

विद्याएँ जानते हो?" कछुए ने बड़े ही घमंड से कहा- "मैं दस विद्याएँ जानता हूँ।" खरगोश ने मुँह लटकाकर कहा- "मैं तो केवल एक ही विद्या जानता हूँ।"

खरगोश और कछुआ दोनों हर रोज़ साथ-साथ खेलते थे। एक दिन किसी मछुआरे ने नदी में जाल डाला। उस जाल में कछुआ भी फँस गया। उस दिन वह खरगोश के पास नहीं पहुँच सका। खरगोश को चिंता हुई। वह कछुए से मिलने नदी पर गया। खरगोश ने देखा कछुआ मछुआरे के जाल में फँसा हुआ छटपटा रहा है। यह देखकर खरगोश चुपके से छिपते-छिपाते कछुए के पास गया और उससे कहने लगा-"दोस्त, तुम तो दस विद्याएँ जानते हो। अपनी किसी भी विद्या से उपाय कर जाल से बाहर आ जाओ।" कछुए ने बहुत कोशिश की, लेकिन वह जाल से निकल न सका। उसने खरगोश से विनती की "दोस्त, अब तुम ही मेरी जान बचा सकते हो। दया करके अपनी विद्या से उपाय करके मेरी जान बचाओ।" खरगोश भी अपने दोस्त को मुसीबत में देखकर दुःखी था। उसने कछुए से कहा- "दोस्त, जब मछुआरा यहाँ आए, तो तुम मरने का नाटक कर लेना। वह तुम्हें मरा हुआ जानकर जाल से निकालकर नदी के बाहर रख देगा। उसी समय तुम नदी में चले जाना।" कछुए ने ऐसा ही किया। मछुआरे ने कछुए को मरा हुआ जानकर उसे जाल से निकालकर नदी के बाहर ज़मीन पर रख दिया। फिर रस्सी उठाने झाड़ी की ओर चला गया। मछुआरे को झाड़ी की तरफ़ जाता देख कछुआ जल्दी से उठा और नदी की तरफ़ चलने लगा। कछुआ जाल में फँसने के कारण थोड़ा लँगड़ाकर चल रहा था। शायद उसके पैर में चोट लग गई थी। खरगोश ने कछुए से कहा-"दोस्त, जल्दी करो मछुआरा रस्सी लेने पास की झाड़ी की तरफ़ ही गया है।" खरगोश की बात सुन कछुए ने कहा- "दोस्त, मेरा पैर घायल है। मुझसे जल्दी नहीं चला जा रहा है। शायद अब मैं बच न सकूँगा। तुम यहाँ से चले जाओ और अपनी जान बचाओ। कहीं मछुआरे की नज़र तुम पर भी न पड़ जाए।"

अपने दोस्त की निराशा भरी बात सुनकर खरगोश बोला-"दोस्त, जब तुमसे दोस्ती की है, तो निभाऊँगा भी। तुम घबराओ मत मैं कुछ करता हूँ।" यह कहकर खरगोश झाड़ी से निकलकर लँगड़ाकर चलने लगा। मछुआरा उसे पकड़ने के लिए भागा। खरगोश ने मछुआरे को जंगल में इधर-उधर खूब भगाया। इस तरह वह मछुआरे को कछुए से बहुत दूर ले गया। फिर खरगोश मछुआरे को चकमा देकर वापस नदी पर आ गया। अब तक कछुआ भी नदी में जा चुका था। खरगोश को नदी पर आया देख कछुए ने अपने दोस्त का धन्यवाद किया। इस तरह अपने दोस्त की समझदारी से कछुए की जान बच गई।

शिक्षाः सच्ची दोस्ती की परख मुसीबत में ही होती है।

गतिविधि- कुदरती दृश्य का चित्र बनाओ अथवा चिपकाओ।

कविता- 17
छोटी-सी हमारी नदी
लेखक :रवीन्द्रनाथ ठाकुर

पाठ का सारः छोटी-सी हमारी नदी में कवि रवींद्रनाथ ठाकुर बताते हैं कि हमारी एक नदी है जो छोटी है और जिसकी धार टेढ़ी-मेढ़ी है। गर्मियों में इसमें कम पानी होता है। अतः उसे पार करना आसान होता है। पानी बस घुटने भर तक ही होता है। बैलगाड़ी इसमें से आराम से गुजर जाता है। इस नदी के किनारे ऊँचे हैं और पाट ढालू है। इसके तल में बालू कीचड़ का नामोनिशान नहीं। इसके दूसरे किनारे पर ताड़ के वन हैं जिसकी छाँहों में ब्राह्मण टोला बसा है। वे नदी में नहाते हैं। और उसके बाद अगर समय बचा तो मछली भी मारते हैं। उनके घर की स्त्रियाँ बालू से बर्तन साफ करती हैं। फिर कपड़े धोती हैं। उसके बाद वे घर चली जाती है; वहाँ के काम करने। लेकिन जैसे ही आषाढ़ का महीना आता है खूब पानी बरसने लगता है। और यह नदी पानी से भर जाता है। तब इसकी धार बहुत तेज हो जाती है। इसकी कलकल की आवाज से चारों तरफ कोलाहल मच जाता है। बरसात के दौरान नदी में आँवरें भी देखने को मिलती हैं। लोग झुंड में वर्षा की उत्सव मनाते हैं।कवि कहता है कि हमारी नदी छोटी है और इसकी धार टेढ़ी-मेढ़ी है। गर्मी के दिनों में इसमें घुटने भर तक पानी होता है। अतः इसे पार करना सबके लिए आसान होता है। चाहे वह आदमी हो या जानवर या बैलगाड़ी। इस नदी के किनारे ऊँचे हैं और इसके पाट ढालू हैं। किन्तु इसकी तली में बालू कीचड़ का नामोनिशान नहीं है। काँस के फूल खिलने पर धूप जैसे सफेद दिखते हैं। इसकी डालियों पर मैना दिनभर किचपिच-किचपिच करती रहती हैं। रात के समय सियार हुआँ-हुआँ करते हैं।नदी के बारे में वर्णन करते हुए कवि कहता है कि इसके दूसरे किनारे पर आम और ताड़ के पेड़ हैं। उन्हीं की छाँह में ब्राह्मण टोला बसा है। उनके छोटे-छोटे बच्चे किनारों पर उछल-उछल कर नहाते हैं। वे गमछों में पानी भरभर कर अपने शरीर पर उड़ेलते हैं। कभी-कभी जब वे नहाकर जल्दी निबट जाते हैं तो नदी में मछलियाँ पकड़ते हैं। उनके घर की औरतें नदी से बालू लेकर बर्तन (लोटे-थाली) माँजती हैं। फिर कपड़े धोती हैं और उसके बाद अन्य काम करने के लिए घर को चल देती हैं।कवि कहता है कि आषाढ़ के महीने में जब खूब वर्षा होती है तब यह नदी पानी से भर (उतरा) जाती है। तब इसकी धार काफी तेज हो जाती है। इसकी तेज चाल से इतनी कलकल की आवाज आती है कि चारों ओर शोर मच जाता है। इसका पानी गंदा हो जाता है। गँदले पानी में पानी की घिरनी भंवरी की तरह चलती है। नदी के दोनों तरफ के वनों में खूब कोलाहल मचा रहता है। वर्षा के दौरान उत्सव जैसा माहौल हो जाता है। सारा संसार जाग उठता है उत्सव मनाने के लिए।

कठिन शब्द लिखिए

- ढ़ोर-डंगर
  बैलगाड़ी
- झकाझक
  बालू
- उजले
  अमराई
- ताड़-वन
  माँझती
- धार-कछारो
  साँझ-सवेरे

शब्दार्थ लिखिए

- अमराई- आम का बाग
- कछार- घाटी
- भँवरा- तेज लहरों का गोला
- सघन- घना
- टोला- बस्ती
- आषाढ़-बरसात का एक महीना।
- दन्नाती-तेजी से।
- काँस- झाँडी
- पाट- विस्तार
- गमछा- छोटा तौलिया
- लोटा- छोटा कलश
- कोलाहल-शोर।

गैंदले-गंदा।

वैकल्पिक प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

१:नदी के किनारे और पाट कैसे है?

उत्तर :(क)ऊँचे और ढाल (ख)नीचे और समतल

(ग)गहरे और ऊँचे (घ)गंदे और संकीर्ण

२:उजले जैसे घाम का तात्पर्य क्या है?

उत्तरः :(क)बादलो वाली धूप (ख)धूप का न होना

(ग)खुली धूप का होना (घ)इनमे से कोई नही

३:बरसात मे नदी का जल कैसा हो जाता है?

उत्तरः :(क)स्वच्छ (ख)अशुद्रध

(ग)गँदला (घ)अपवित्र

४:टोलो मे कौन - सा उत्सव खूब धूम-धाम से मनाया जाता है?

उत्तरः :(क)वर्षा उत्सव (ख)ईद

(ग)गुरु पर्व (घ)क्रिसमस

निन्मलिखित प्रश्नो के अति लघु उत्तर लिखिए।

1- गर्मियों में नदी में कितना पानी रहता है?

उ- गर्मियों में नदी में घुटनो तक का पानी रहता है।

2- नदी के दूसरे किनारे पर स्थित बस्ती किनकी है और वह किस प्रकार बसाई गई हैं?

उ- नदी के दूसरे किनारे पर ताड़-वन है वहाँ ब्राहमणों दवारा बस्ती बसाई गई -हैं।

3- बच्चे मछलियाँ कैसे पकडते है?

उ- बच्चे अपने गमछो का आँचल बिछाकर मछलियाँ पकडते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

1- कविता में नदी के जल के स्वच्छ होने का वर्णन किस प्रकार किया गया है?

उ- कविता में नदी के जल को इतना स्वच्छ व साफ़ बताया है जैसे आरपार -दिखाई दे जैसे काँसे का बर्तन चमक रहा हो।

2- मैना नदी तट का सौदर्य किस प्रकार बढ़ा रही है?

उ- मैना नदी तट पर दिन भर किचपिच करती है और वहाँ के वातावरण को और सुंदर बना देती है।

3- नदी के दोनों किनारों के आस-पास के प्राकृतिक दृश्य कैसे हैं?

उ- नदी के एक किनारे पर घनी अमराई है और दूसरी और ताड़वन है जहाँ किरकिच कर दृश्य और भी सुंदर बना देते हैं। बच्चों को नहाते हुए, - मछलियाँ पकडते हुए शोर व बहुओं का कपड़े धोना, बर्तन और पानी भरना दृश्य को सुंदर बना देते हैं।

4- बच्चे नदी में स्नान करने का आनंद किस प्रकार उठा रहे हैं?

उ- छोटे बच्चे नदी में उछल-उछल कर नहा रहे हैं और गमछा भिगा कर अपना शरीर भिगा रहे हैं।

5- टोले की बहुएँ नदी से किस प्रकार जुड़ी हुई हैं?

उ- टोले की बहुएँ लोटे-थाल माँज रही है, कपड़े धो रही है, जल्दी-जल्दी काम करके अपने घर की और जा रही है।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१ःगर्मियो मे मवेशी और अन्य पशु-आसानी से नदी पार के जाते है। (सही)

२ःनदी के दूसरे तट पर खजूर और महुए के पेड़ है। (गलत)

३ःछोटे बच्चे बीच नदी मे जाकर उछल-कूद करते है। (गलत)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१ःनदी की **धार** टेढी-मेढी है।

२ःनदी के एक तट पर **काँस** फूले हुए है।

३ःबच्चे नदी तट पर **छोटी-छोटी** मछलियाँ पकडते है।

४ः**वेग** और **कलकल** के कारण कोलाहल उठता है।

व्याकरण विभागःवाक्य शुद्धी

वाक्य, भाषा की महत्वपूर्ण इकाई होता है लिखने या बोलने के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा जो कुछ लिखा या कहा जाए, वह बिल्कुल स्पष्ट सार्थक और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो। ... वाक्यों के विभिन्न अंग यथास्थान होना चाहिए साथ ही विराम-चिह्नों का भी उचित जगहों पर प्रयोग होना चाहिए।

अशुद्ध – आज आसमान ऊँचाई में बादल हैं।

शुद्ध – आज आसमान में बादल है।

अशुद्ध – मैं सोमवार के दिन आपके गाँव आऊँगा।

शुद्ध – मैं सोमवार को आपके गाँव आऊँगा।

अशुद्ध – हरिनारायण को सफल होने में निराशा है।

शुद्ध – हरिनारायण को सफल होने की आशा नहीं है।

अशुद्ध – वह पशु क्यों रेंकते हैं।

शुद्ध – गधा क्यों रेंकता है।

अशुद्ध – घूस लेने से मना करना ऐसे दृष्टान्त के उदाहरण कम मिलते हैं।

शुद्ध – घूस लेने से मना करना ऐसे दृष्टान्त कम मिलते हैं।

अशुद्ध – पंडित जी ने कहा कि शुभ कार्य में संकट भी आते ही हैं।

शुद्ध – पंडित जी ने कहा कि शुभ कार्य में बाधाएँ भी आती ही हैं।

अशुद्ध – परीक्षा दो तारीख के दिन सम्पन्न होगी।

शुद्ध – परीक्षा दो तारीख को सम्पन्न होगी।

अशुद्ध – 'भारतीय नारी' नामक शीर्षक निबंध अच्छा है।

शुद्ध – 'भारतीय नारी' शीर्षक निबंध अच्छा है।

अशुद्ध – भूमिहीन कृषक रामासरे जीता है।

शुद्ध – भूमिहीन कृषक राम के आसरे जीता है।

अशुद्ध – महात्मा के दर्शन से मेरा मन गदगद हो गया।

शुद्ध – महात्मा के दर्शन से मैं गद्-गद् हो गया।

अशुद्ध – दुविधाग्रस्त दीपक से अध्यापक ने कहा कि तुम गीता की पुस्तक पढ़ो।

शुद्ध – दुविधाग्रस्त दीपक से अध्यापक ने कहा कि तुम गीता पढ़ो।

अशुद्ध – देश में अराजकता की समस्या बढ़ रही है।

शुद्ध – देश में अराजकता बढ़ रही है।

अशुद्ध – सेठ रामलाल ने दान दिया यह उनकी अनुकम्पा और कृपा है।

शुद्ध – सेठ रामलाल ने दान दिया यह उनकी अनुकम्पा है।

अशुद्ध – सेना के मोर्चा संभालते ही गोलियाँ की बाढ़ आ गई।

शुद्ध – सेना के मोर्चा संभालते ही गोलियाँ की बौछार आ गई।

अशुद्ध – स्टेशन पर चाय-कॉफी की दुकान है।

शुद्ध – स्टेशन पर चाय और कॉफी की दुकान है।

अशुद्ध – सैनिक की छुट्टी की मंजूरी स्वीकृत हो गई।

शुद्ध – सैनिक की छुट्टी की प्रार्थना स्वीकृत हो गई।

अशुद्ध – सर टॉमसरो ने जहाँगीर को उपहार भेंट किया गया।

शुद्ध – सर टॉमसरो ने जहाँगीर को उपहार दिया।

अशुद्ध – शिमला के दृश्यावलियाँ सुन्दर हैं।

शुद्ध – शिमला के दृश्य सुन्दर हैं।

अशुद्ध – राजू के पिताजी ने उसे समझाया कि वहाँ प्रतिदिन जाने में तुम्हारी क्या अच्छाई है।

शुद्ध – राजू के पिताजी ने उसे समझाया कि वहाँ प्रतिदिन जाने में तुम्हारी क्या भलाई है।

अशुद्ध – लालबहादुर शास्त्री जी ख्यातिप्राप्त प्रसिद्ध नेता थे।

शुद्ध – लालबहादुर शास्त्री जी ख्यातिप्राप्त नेता थे।

अशुद्ध – लगभग 200 वर्षों तक भारत के गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।

शुद्ध – लगभग 200 वर्षों तक भारत के पैरों में गुलामी की बेड़िया पड़ी रहीं।

अशुद्ध – विकास ने रमेश से कहा कि जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कथा सुनी है ?

शुद्ध – विकास ने रमेश से पूछा कि जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत सुनी है?

अशुद्ध – विवेक के हाठ उठाते हुए कहा कि आपके प्रश्न का समाधान मेरे पास है।

शुद्ध – विवेक ने हाथ उठाते हुए कहा कि आपके प्रश्न का उत्तर मेरे पास है।

अशुद्ध – वह तो गया किन्तु वह उसकी पुस्तक नहीं ले गया।

शुद्ध – वह तो गया किन्तु अपनी पुस्तकें नहीं ले गया।

अशुद्ध – किरण और उसकी बहिन पढ़ने के लिए विद्यालय गई हैं।

शुद्ध – किरण और उसकी बहिन पढ़ने के लिए विद्यालय गई हैं।

अशुद्ध – तेरे को यहाँ किसने बुलाया है ?

शुद्ध – तुझे यहाँ किसने बुलाया है ?

अशुद्ध – मेरे को आज किताबें और कापियाँ चाहिए।

शुद्ध – आज मुझे भी पुस्तकें और कापियाँ चाहिए।

लेखन विभाग :चित्र लेखन

(1)

- प्रस्तुत चित्र में जल-प्रदुषण को प्रभावित करने वाली स्थिति को दर्शाया गया है।
- इस चित्र में एक व्यक्ति कपड़े धो रहा है, कुछ जानवर नहा रहे हैं, नाले का पानी नदी में गिर रहा है और कारखानों से निकलने वाले रसायन आदि अपशिष्ट पदार्थ भी नदी में गिर रहे हैं।
- हम सभी जानते हैं कि इन सब से नदी का पानी दूषित होता है।
- जल के बिना मनुष्यों का जीवन संभव नहीं है और नदियों का जल मुख्य स्त्रोत है।
- नदियों के जल को प्रदूषित होने से बचाने के लिए हमें समय रहते अपनी इन गलतियों को सुधारना होगा, अन्यथा इसके दुष्प्रभाव बहुत भयानक होंगे।

2)

- यह दृश्य किसी महानगर के चौराहे का है।
- लाल बत्ती होने के कारण गाड़ियाँ रुकी हुई हैं।

- फुटपाथ पर एक बच्चा एक वृद्ध महिला को सड़क पार करवा रहा है।
- एक व्यक्ति अपने स्कूटर को आधे फुटपाथ पर ले आया है।
- यह नियम के विरुद्ध है। यातायात के लिए बनाए गए नियमों का पालन न करने से ही दुर्घटनाएँ होती हैं।
- कुछ लोग हरी बत्ती होने का इन्तजार नहीं करते और गाड़ी दौड़ाकर ले जाते हैं।
- ऐसा करे समय गाड़ियाँ परस्पर टकरा जाती हैं और दुर्घटना हो जाती है।
- अतः वहन चलाते समय यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए।

गतिविधि-छोटी-सी हमारी नदी कविता चार्ट पेपर पर लिखिए।

पाठ- 18

चुनौती हिमालय की

लेखक : सुरेखा पणंदीकर

पाठ का सारः एकबार जवाहरलाल नेहरू अपने चचेरे भाई के साथ कश्मीर घूमने निकले थे और जोज़ीला पास से होकर लद्दाखी इलाके की ओर चले आए थे। उन्हें अमरनाथ जाना था। किशन गड़ेरिया ने उन्हें रास्ते की मुश्किलों के बारे में बताया लेकिन इसका उन पर कोई असर नहीं हुआ। मुश्किलों के बारे में सुनकर सफर के लिए वे और भी उत्सुक हो गए। उनके साथ कुली तो था ही, किशन और उसकी बेटी भी उसके साथ जाने को

तैयार हो गई।अगले दिन सुबह-सुबह जवाहरलाल नेहरू तैयार होकर बाहर आ गए। तिब्बती पठार का दृश्य निराला था। दूर-दूर तक वनस्पति रहित उजाड़ चट्टानी इलाका दिखाई दे रहा था। सर्द हवा के झोंके हड्डियों तक ठंडक पहुँचा रहे थे।जवाहरलाल जी ने हथेलियाँ आपस में रगड़कर गरम कीं और कमर में रस्सी लपेटकर चलने को तैयार हो गए। हिमालय की दुर्गम पर्वतमाला एक बड़ी चुनौती थी जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। किशन गड़ेरिया उनका गाइड बन गया। जवाहरलाल ने आठ मील की चढ़ाई चढ़नी शुरू कर दी। आठ मील की दूरी कोई बहुत नहीं होती, लेकिन इन पहाड़ी रास्तों पर आठ कदम चलना मुश्किल लगने लगा। रास्ता सुनसान था। चारों तरफ बस पथरीली चट्टानें और सफेद बर्फ दिख रहे थे। जवाहरलाल बढ़ते जा रहे थे। ज्यों-ज्यों ऊपर चढ़ते गए, त्यों-त्यों साँस लेने में दिक्कत होने लगी। कुली के नाक से खून बहने लगा। जल्दी से जवाहरलाल ने उसका उपचार किया। थोड़ी देर में बर्फ पड़ने लगी और फिसलन बढ़ गई। चलना दुभर होने लगा। थकान से अलग बुरा हाल हो रहा था। तभी सामने बर्फीला मैदान नजर आया जो शीघ्र ही बर्फ के धुंधलके में ओझल हो गई।सुबह चार बजे से चढ़ाई करते-करते दिन के बारह बजे तक वे लगभग सोलह हज़ार फ़ीट की ऊँचाई पर आ गए। किन्तु अभी भी अमरनाथ की गुफा का कुछ पता नहीं चल पा रहा था।जवाहरलाल अपने बुलंद इरादों के साथ हिमालय को चुनौती देते हुए दुर्गम पथ पार करने में जुटे थे। कुली ने उन्हें वापस कैंप में चलने की सलाह दी। लेकिन जवाहरलाल लौटने के बारे में जरा भी सोच नहीं सकते थे। उन्हें अमरनाथ पहुँचना था। तभी किशन ने बताया कि अमरनाथ की गुफा तो दूर बर्फ के मैदान के पार है। फिर तो जवाहरलाल में और भी जोश आ गया। वे फुर्ती से बढ़ने लगे। आगे उन्हें गहरी खाइयाँ, बर्फ से ढंके गड्ढे और फिसलन मिली। कभी पैर फिसलता तो कभी बर्फ में पैर अंदर पॅसता जाता। चढ़ाई मुश्किल थी लेकिन जवाहरलाल को इसमें मजा आ रहा था। अचानक उन्हें एक बड़ी गहरी खाई दिखी। इसके पहले कि वे अपने को सँभालते, लड़खड़ाकर खाई में गिर पड़े। रस्सी से बँधे वे हवा में लटकने लगे। रस्सी ही उनका एकमात्र सहारा था जिसे वे कसकर पकड़े थे। साथ के लोगों ने रस्सी खींचकर उन्हें बाहर निकालने की बात सोची। लेकिन जवाहरलाल ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया। उन्होंने खाई की दीवार से उभरी चट्टान को मजबूती से पकड़ लिया और पथरीले धरातल पर पैर जमा लिए। पैरों तले धरती के एहसास से जवाहरलाल की हिम्मत बढ़ गई। फिर स्वयं के प्रयास और कुली एवं किशन के सहयोग से वे किसी तरह ऊपर पहुँच गए। कपड़े झाड़कर वे फिर चलने को तैयार हो गए। लेकिन आगे गहरी और चौड़ी खाइयों की संख्या बहुत थी। खाइयाँ पार करने का उचित सामान भी किसी के पास न था। इस कारण जवाहरलाल को अमरनाथ तक का सफर अधूरा छोड़कर वापस लौटना पड़ा।

कठिन शब्द लिखिए

- तड़के
- लालिमा
- निराला
- उजाड़
- स्पर्श
- ग्लेशियर
- दुर्गम
- गडेरिया
- वीरान
- पथरीली
- उपचार
- मुकुट

शब्दार्थ लिखिए

- तडके- सुबह सवेरे
- लालिमा- हल्का लाल उजाला जब सूर्य निकलता है
- निराला- अनोखा
- स्पर्श- छूना
- दुगंम- कठिन
- वीरान- सूनसान
- पथरीलो- पत्थरों से भरी
- उपचार- इलाज
- ग्लेशियर- बर्फ जहाँ से पिघलकर नदी बनती है
- सपाट- सीधा

वैकल्पिक प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

१ःमातायन और अमरनाथ के बीच की दूरी कितनी थी?

उत्तरः(क)दस मील (ख)आठ मील

(ग) छःमील (घ) इनमे से कोई नही

२ःनेहरुजी ने पहाड पर चढने से पहले अपने किस अंग मे रस्सी बाँधी थी?

उत्तरः (क)पैरो मे (ख)हाथो मे

(ग)गर्दन मे (घ)कमर मे

३ःखाई मे गिरने के बाद नेहरुजी को रस्सी कसकर पकडे रहने की बात किसने कही?

उत्तरः (क)उनके भाई से (ख)किशन ने

(ग)कुली ने (घ)सबने मिलकर

४ःनेहरुजीके खाई से बाहर आने के बाद उनके भाई ने किसका शुक्रिया अदा किया?

उत्तरः (क)किशन का (ख)कुली का

(ग)क और ख दोनो (घ)ईश्वर का

निन्मलिखित प्रश्नो के अति लघु उत्तर लिखिए।

1- अपना कौन-सा काम, किसे सौंपकर किशन, नेहरु जी के साथ चल पड़ा था?

उ- अपना भेड़-बकरी चराने का काम बिशन अपनी बेटी को सौंपकर नेहरुजी के साथ चल पड़ा।

2- पाठ में बर्फ़ीले मैदान की तुलना किससे की गई है?

उ- पाठ में बर्फ़ीले मैदान की तुलना देवताओं के मुकुट से की गई हैं।

3- नेहरुजी को खाई से निकलने में किस-किसने मदद की?

उ- नेहरुजी को खाई से निकलने में उनके भाई, एक कुली, और बिशनने मददकी।

4- नेहरुजी सदा किससे आकर्षित होते रहे?

उ- नेहरुजी सदा हिमालय की ऊचाईयों से आकर्षित होते रहे।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

1- जवाहरलाल नेहरु ने किसकी कौन-सी चुनौती स्वीकार की थी?

उ- जवाहरलाल नेहरु ने हिमालय की ऊचाईयों की व दुर्गम रास्तों की चुनौती स्वीकार की।

2- तिब्बत की बर्फ़ीली हवा असहय होने के साथ-साथ सुखदायी एवं लाभकारी भी थी। कैसे?

उ- तिब्बती पठार का दृश्य निराला तो दिख रहा था, दूर-दूर तक वनस्पति-रहित उजाड़ चटटानी इलाको में एकदम उदास वीरान, बर्फ से ढ़की हुई लेकिन सुबह की सुनहरी किरणों का स्पर्श, सफेद बर्फ ऐसे चमकती मानो ताज हो ऐसा दृश्य मन को सुकून व शांति देता है।

3- नेहरुजी के खाई में गिरने पर रस्सी ही एकमात्र उनका सहारा थी।कैसे?

उ- नेहरुजी चढ़ाई चढ़ रहे थे तब रस्सी से बँधे थे। पहाड़ो पर रस्सी के सहारे एक दूसरे को बाँधकर चढ़ते है, जब नेहरुजी खाई में गिरे तो फ़िसलन के कारण ऊपर आ पाना कठिन था। तब बस एक मात्र सहारा रस्सी ही होती है जिसे ऊपर वाले लोग खींचते है और गिरा हुआ व्यक्ति ऊपर आ पाता है।

निम्नलिखित प्रश्नो के दीर्घ उत्तर लिखिए।

1- अमरनाथ जाने की जवाहरलाल नेहरुजी की उत्सुकता किसने , किस प्रकार बढ़ा दी?

उ- अमरनाथ जाने की उत्सुकता जवाहरलाल नेहरुके मन में उनके भाई, कुली, और बिशनने बढ़ा दी। वे बताते रहे अमरनाथ की ऊँचाई, रास्तों की कठिनाइयों, दुर्गम-वीरान पत्थरीलें रास्तों का रोमांच और बर्फीले तूफानों का सामना करने की बात सुन कर नेहरुजी अमरनाथ जाने के लिए बहुत उत्सुक हुए।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१:जोजीला मातायान की तुलना मे अमरनाथ से दूर न था। (गलत)

२:नेहरुजी अपने चचेरे भाई के साथ कश्मीर की सैर करने निकले थे। (सही)

३:तिब्बती पठार की हरियाली आँखो को सुकून देने वाली थी। (गलत)

४:पहाड़ पर चढने के दौरान नेहरुजी को एक कुली ने लौट जाने का सुझाव दिया था। (सही)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१:नेहरुजी **अमरनाथ** जाने के लिए सुबह-सवेरे तैयार हो गए थे।

२:पहडी रास्तो पर एक-एक **डग** भरना भी कठिन था।

३:बर्फीला मैदान दूर से जितना **सपाट** दिख रहा था, असलियत मे उतना ही ऊबड़-खाबड़ था।

४:नेहरुजीके पास पहाडी खाइयाँ पार करने का उचित **सामान** नही था।

लेखन विभाग :संवाद लेखन

<u>डॉक्टर और मरीज के पिता के बीच संवाद</u>

डॉ०- देखिए सर, आपका बेटा बिल्कुल निर्दोष है। इसके चरित्र के कारण इसे यह रोग नहीं हुआ है।

पिता- तो फिर कैसे हो गया ?

डॉ०- इस रोग के फैलने के कई कारण होते हैं।

पिता- डॉ० साहब, कहीं यह रोग मच्छरों के काटने से तो नहीं होता ?

डॉ०- बिल्कुल नहीं। इसके मात्र दो कारण हैं।

पिता- क्या .... ?

डॉ०- पहला कारण तो मैंने बताया ही 'असुरक्षित यौन-संबंध और दूसरा कारण है- किसी-न-किसी रूप में संक्रमित ब्लड से सम्पर्क होना।

पिता- डॉक्टर साहब, मेरा भी चेकप कर ही दीजिए। कहीं यह .... ।

डॉ०- चेकप करवाने में कोई हर्ज नहीं है; परन्तु आप यह जान लें कि यह रोग छुआछूत वाला नहीं है। यह रोगी से हाथ मिलाने, उसे चूमने, एक-साथ खाने-पीने से नहीं होता।

पिता- इससे बचने का कोई तो उपाय होगा न सर ?

डॉ०- एक ही उपाय है- सावधानी।

पिता- कैसी सावधानी ?

डॉ०- अपने चरित्र पर ध्यान दें; वेश्यागमन से बचें; एक ही सीरिंज का उपयोग बार-बार अनेक लोगों के लिए नहीं हो और एक ही ब्लेड का प्रयोग भी अनेक लोगों के लिए न हों, क्योंकि एड्स एक वायरल रोग है। जब तक इसके रोगी के ब्लड से किसी दूसरे का ब्लड संक्रमित नहीं होगा, तब तक इसका वायरस फैल ही नहीं सकता।

पिता- मेरे विक्की के लिए क्या उपाय है, डॉक्टर साहब ?

डॉ०- अब एक ही उपाय है- इसे खूब लार-दुलार कीजिए; क्योंकि यह चंद दिनों का मेहमान है।
(पिता का सुबक-सुबककर रोना)

2. बढ़ती महँगाई को लेकर दो नागरिकों की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

हरिप्रसाद – अरे पंकज क्या लाए हो बाजार से?
पंकज – जी, अंकल ज्यादा कुछ नहीं, बस थोड़ी सी दालें और चावल ही लाया हूँ।
हरिप्रसाद – अब इस बढ़ती महँगाई ने तो सबका हाथ ही तंग कर दिया है।
पंकज – कुछ न पूछिए! सभी चीजों के दाम आसमान को छू रहे हैं, कोई भी चीज सस्ती नहीं है। कुछ दालों के

तो 200 रुपए किलो तक पहुँच गए हैं।

हरिप्रसाद – दालें ही क्या सभी चीजें इतनी महँगी हो गई हैं कि वे आम आदमी की पहुँच से बाहर होती जा रही हैं।

पंकज – पर मेरी एक बात समझ में नहीं आती। महँगाई को रोकने के लिए सरकार क्यों कुछ नहीं कर रही है?

हरिप्रसाद – अरे भैया! मुझे तो लगता है दाल में कुछ काला है। वरना सरकार चाहे तो क्या कुछ नहीं कर सकती। महँगाई के खिलाफ़ कानून बना सकती है। चीजों के दाम तय कर सकती है।

पंकज – यही नहीं, उचित दाम से अधिक मूल्य वसूलने वालों को धर पकड़ भी सकती है।

हरिप्रसाद – हाँ, सरकार आए दिन कुछ न कुछ बयान अवश्य देती है। कभी वायदे करती है, कभी योजनाएँ बनाती है, पर न तो वे वायदे कभी पूरे होते हैं और न ही वे योजनाएँ।

पंकज – आश्चर्य की बात यह है कि विपक्षी पार्टियाँ भी सरकार पर दबाव डालने के लिए कुछ नहीं कर रही हैं।

गतिविधि-हिमालय पर्वत का चित्र बनाए या चिपकाए।

Thank You